MPEDA

समाचार पत्र

खंड. VII, संख्या. 6, सितंबर 2019

माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह, एमपीईडीए अध्यक्ष श्री. के.एस. श्रीनिवास भा.प्र.से. को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान करते हुए।

एक्वा एक्वरिया इंडिया 2019 के उद्घाटन समारोह के दौरान भारत के माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा "पर्ल ब्रांड आर्टेमिया" का विमोचन

www.mpeda.gov.in

CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.

CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

विषय सूची

खंड. VII, संख्या. 6, सितंबर 2019

03

एक्वा एक्वेरिया इंडिया 2019

19

भारत में जलीय कृषि की अपार क्षमता का उपयोग जरूरी

22

21वें जापान इंटरनेशनल सीफूड एंड टेक्नॉलजी एक्सपो (जेआईएसटीई) में भारत ने पेश किए अपने प्रमुख उत्पाद

36

एमपीईडीए, कोच्ची को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

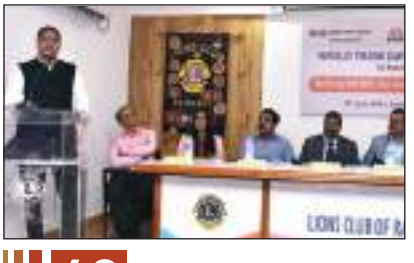

40

वर्ल्ड ट्रेड डे महाराष्ट्र में एमपीईडीए

43

पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण

49

एचएसीपी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस प्रकाशन के विद्वत्तापूर्ण लेखों में व्यक्त विचार एमपीईडीए के विचार नहीं है, यह सिर्फ लेखक के विचार हैं।
इस प्रकाशन के विद्वत्तापूर्ण लेखों के जानकारी की सटीकता की ज़िम्मेदारी लेखकों पर निहित हैं,
यह न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय गण की ज़िम्मेदारी है।

एम.पी.ई.डी.ए
खंड. VII, संख्या. 6, सितंबर 2019 समाचार पत्रिका

संपादक मंडल

श्री टी. डोला शंकर, आईओएफ़एस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के.वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विपणन संवर्धन)

डॉ. टी.आर. जिबिन कुमार
उप निदेशक (एमपीईडीए रत्नागिरी)

संपादक
श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक
श्रीमती के.एम. दिव्या मोहनन
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय सहयोग
बिवर्ल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड
166, जवहर नगर, कड़वन्त्रा,
कोच्ची, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट
रोबी अंबाड़ी

www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए हाउस, पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036, फोन: +91 484 2311979

द्वारा प्रकाशित
एमपीईडीए हाउस,
पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036

प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017 में मुद्रित

आप के लिए

के.एस. श्रीनिवास आईएएस
अध्यक्ष

प्रिय मित्रों,

अमेरिकी सरकार द्वारा लाया गया नया कानून 'समुद्री स्तनपायी संरक्षण अधिनियम' (एमएमपीए) 1 जनवरी, 2017 से अस्तित्व में आ चुका है। इस अधिनियम के अंतर्गत निर्धारित मानदंडों का पालन करना उन देशों के लिए अनिवार्य होगा जो संयुक्त राज्य अमेरिका को मछली और अन्य मत्स्य उत्पादों का निर्यात करते हैं। हालांकि इस अधिनियम का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए निर्यातक देशों को पांच साल की छूट का प्रावधान किया गया है ताकि वे स्तनपायी जीवों की सुरक्षा के लिए अमेरिकी कानून के अनुसार अपने मत्स्य पालन उद्योग का विनियमन कर सकें। छूट की यह अवधि 1 जनवरी, 2017 से शुरू होकर 1 जनवरी, 2022 को समाप्त होने जा रही है।

अमेरिकी अधिनियम के आयात संबंधी प्रावधानों के तहत देशों को 31 जुलाई, 2019 तक नेशनल मैरीन फिशरीज सर्विस (एनएमएफएस) को एक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करना आवश्यक था लेकिन बाद में एनएमएफएस ने यह मियाद बढ़ाकर 13 सितंबर, 2019 कर दी। प्रगति रिपोर्ट तैयार करने के लिए एमपीईडीए ने वाणिज्य विभाग की अनुशंसा से एक तकनीकी समिति का गठन किया है जिसमें विभिन्न मत्स्य अनुसंधान संस्थानों, सी-फूड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन, राज्यों के मत्स्य पालन विभागों और वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रतिनिधि शामिल किए गए हैं। प्रगति रिपोर्ट तैयार करने के लिए एमपीईडीए ने विभिन्न राज्यों से भी जरूरी जानकारियां जुटाई हैं।

प्रगति रिपोर्ट में देश के जलीय स्तनपायी जीवों के साथ-साथ समुद्री भंडार के आकलन से जुड़े डेटा की भी आवश्यकता होती है। हालांकि एमपीईडीए को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर पता चला है कि हमारे यहां केवल 'गगेन्टिक डॉल्फिन' और 'इरावैडी डॉल्फिन' के भंडार का ही नियमित रूप से मूल्यांकन किया गया है। इस स्थिति को देखते हुए एमपीईडीए ने एफएओ जोन 51 और 57 में समुद्री स्तनधारियों के भंडार के आकलन के लिए केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान द्वारा सौंपे गए प्रस्ताव पर वाणिज्य विभाग से सहयोग मांगा है।

तकनीकी समिति तमाम सूचनाओं के साथ निर्धारित समय-सीमा से पहले एनएमएफएस को ऑनलाइन प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकती है। हम आशा करते हैं कि अध्ययन, मूल्यांकन संरक्षण संबंधी उपायों के साथ भारत यूएस मरीन स्तनपायी संरक्षण अधिनियम के तहत अपनी विभिन्न मत्स्य पालन इकाइयों के लिए छूट की जोरदार वकालत कर सकेगा।

इस बीच, यह घोषणा करते हुए मुझे खुशी हो रही है कि 'सीफूड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया' के साथ मिलकर हम 7 से 9 फरवरी, 2020 के दौरान कोच्चि में 22 वां इंडिया इंटरनेशनल सीफूड शो आयोजित करने जा रहे हैं। मत्स्य पालन और समुद्री खाद्य व्यापार का एक प्रमुख हब होने के नाते कोच्चि में हो रहे इस मैगा आयोजन में बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों और प्रदर्शकों की भाग लेने की उम्मीद है।

धन्यवाद।

प्रत्याख्यान : पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि वे इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले उसकी सत्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट करने केलिए उपयुक्त जांच और सत्यापन करें। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, इस पत्रिका के प्रकाशक और मालिक, किसी भी विज्ञापन या विज्ञापनदाता या किसी भी विज्ञापनदाता के उत्पादों और/या सेवाओं का जिम्मा नहीं लेंगे। किसी भी सूरत में इसमें विज्ञापन केलिए इस पत्रिका / संगठन के मालिक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक, निदेशक/ कर्मचारी, किसी भी तरीके से जिम्मेदार/उत्तरदायी नहीं हो सकते।

एमपीईडीए बाहरी इंटरनेट साइटों की सामग्री केलिए जिम्मेदार नहीं है।

एक्वा एक्वेरिया इंडिया2019

हैदराबाद ने की एशिया की सबसे बड़ी जलीय कृषि प्रदर्शनी की मेजबानी

एशिया की सबसे बड़ी जलीय कृषि एवं आलंकारिक मत्स्य पालन प्रदर्शनी 'एक्वा एक्वेरिया इंडिया' (एएआई) के पांचवें संस्करण का आयोजन तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में 30 अगस्त से 01 सितंबर, 2019 तक हुआ। इसमें जलीय कृषि की अद्यतन प्रगति तथा सजावटी मछली के प्रजनन एवं पालन के क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया गया। उच्च कोटि के इस आयोजन का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी था कि विभिन्न हितधारकों को परस्पर संवाद का मंच मिले ताकि वे मत्स्य उद्योग के विकास को बढ़ावा देने वाले उपायों पर विचार-विमर्श कर सकें। साथ ही इस उद्योग में विविधीकरण और तीव्रता के साथ एक स्थिरतापूर्ण विकास की दशाएं सुनिश्चित हो सकें।

तीन दिवसीय इस द्विवार्षिक प्रदर्शनी का आयोजन समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) ने किया था जो कि समुद्री उत्पादों के निर्यात और संबद्ध गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की नोडल एजेंसी के तौर पर काम करता है। इस बार प्रदर्शनी की थीम थी - 'भारत के आंतरिक भू-भाग में नीली क्रांति का प्रवेश'। यह पहली बार था कि इस प्रदर्शनी का आयोजन तेलंगाना जैसे गैर-तटीय राज्य में हुआ। इसका पहला संस्करण 2011 में चेन्नई में तथा दूसरा व तीसरा संस्करण 2013 और 2015 में विजयवाड़ा में आयोजित किया गया था। ये सभी भारत के पूर्वी तटवर्ती क्षेत्र हैं। चौथा संस्करण 2017 में देश के पश्चिमी तट पर पहली बार मंगलोर में आयोजित किया गया था।

इस बार प्रदर्शनी में देश-विदेश के लगभग साढ़े पांच हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रदर्शनी में ढाई सौ स्टाल लगाए गए थे जिनमें उत्पादन और फसल संबंधी विभिन्न प्रौद्योगिकियों, मशीनरी और निर्यातोन्मुखी जलीय कृषि एवं सजावटी मछली क्षेत्र से संबंधी सामान प्रदर्शित किया था। प्रदर्शनी में तीन हजार से अधिक दर्शक पहुंचे।

विश्वभर से आए प्रतिनिधियों में किसान, उद्यमी, हैचरी संचालक, चारा निर्माता, आपूर्तिकर्ता और विभिन्न जलीय कृषि व एक्वेरियम उपकरणों के निर्माता तथा आपूर्तिकर्ता शामिल थे। इन सभी को इस प्रदर्शनी के माध्यम से व्यापारिक सौदों के प्रस्तावों को आगे बढ़ाने के अलावा भारत और दुनिया के बाकी देशों में जलीय कृषि व सजावटी मछली के प्रजनन और पालन की अद्यतन प्रगति से अवगत होने का भी अवसर मिला।

Freight Brokers Global Services Inc.

C-TPAT
Customs Trade Partnership Against Terrorism
BUILDING PARTNERSHIPS • PROTECTING FREEDOM

Looking to Export to the U.S.?

Let our dedicated team with decades of experience assist you

Full Service, Inter-Modal & LTL Trucking

FCL/LCL Ocean Freight

Domestic and International Air Freight

Full Service FDA Security & Compliance Consulting

NEW FOR 2019

Seafood Import Monitoring Program

Now offering 2019 record keeping for NOAA Compliance

Have FBGS be your U.S. team to keep your imports covered for all monitoring requirements

LET'S GET STARTED!

Call: 718.471.1299
Email: Info@FreightBrokersGlobal.com

1200 Brunswick Ave, Far Rockaway, NY 11691

www.FreightBrokersGlobal.com

विपणन समाचार

एक्वा एक्वेरिया इंडिया - 2019 के पंडाल का उद्घाटन

उद्घाटन

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने 30 अगस्त, 2019 को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। उद्घाटन भाषण में उन्होंने जलीय कृषि की पैदावार में सुधार लाने, लोगों को पोषण संबंधी सुरक्षा प्रदान करने और खासकर ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर उत्पन्न करने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जाने की आवश्यकता पर पर विशेष जोर दिया। श्री नायडू ने कहा कि भारत के जलीय कृषि क्षेत्र में भारी वृद्धि दर्ज की गई है लेकिन देश के भीतरी इलाकों और गैर-तटीय राज्यों में विविधता और मूल्य संवर्धन के माध्यम से इसके विस्तार की पर्याप्त संभावना है।

उन्होंने कहा कि चिर स्थायित्व और उत्पादकता भारत के जलीय कृषि क्षेत्र के लिए जुड़वा मंत्र हैं। हमारा देश अंतर्देशीय जलीय कृषि को विकसित करने की अपार संभावना रखता है। इससे हम निर्यात को काफी बढ़ावा दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह गंभीर चिंता का विषय है कि हम देश में उपलब्धत जलीय कृषि क्षमता के थोड़े से ही हिस्से का दोहन कर सके हैं। हम मीठे जल के रूप में जलीय कृषि के लिए उपलब्ध 2.36 मिलियन हेक्टेयर तालाबों और टैंकों का लगभग 40 प्रतिशत ही उपयोग कर पाते हैं। साथ ही हमने खारे पानी के रूप में 1.2 मिलियन हेक्टेयर के संसाधन की कुल क्षमता का सिर्फ 15 प्रतिशत का ही दोहन किया है।

उपराष्ट्रपति ने पैदावार में सुधार के प्रयासों का आह्वान करते हुए कहा कि अधिकांश एशियाई देश मछली उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान दे रहे हैं।

भारत में मीठे पानी की जलीय कृषि की सालाना पैदावार 1.5 से 4.5 टन प्रति हेक्टेयर है जबकि चीन और इस्त्राइल यह

भाषण देते एमपीईडीए के अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास, आईएएस

10 से 15 टन है। इसे देखते हुए यह आवश्यक है कि भारत को निर्यात और घरेलू आवश्यकताओं के लिए अपने उत्पादन में काफी वृद्धि करनी होगी। उपराष्ट्रपति ने एक सुदृढ़ मत्स्य क्षेत्र के लिए जलीय कृषि को सबसे बेहतर विकल्प बताते हुए कहा कि इसके चौतरफा विस्तार की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल जलीय कृषि को महत्व दिया जाना चाहिए। इसके अलावा अपनी विशिष्ट छाप

और निर्यातोन्मु ख जलीय कृषि व्यवहार को अपनाना होगा।

वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के केंद्र सरकार के लक्ष्य का उल्लेख करते हुए श्री नायडू ने जलीय कृषि, खासकर श्रिम्प उत्पादन के क्षेत्र में बेहतर निवेश की वकालत की। उन्होंने कहा कि भारत मछली का चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है और मत्स्य क्षेत्र 40.5 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार देता है। भारत ने 2018-19 के दौरान 13.70 मिलियन टन उत्पादन कर दुनिया के दूसरे सबसे बड़े मछली उत्पादक देश का दर्जा हासिल करने में सफलता पाई। देश अपने कुल निर्यात का 10 प्रतिशत मत्स्य पालन से कमाता है। सकल घरेलू उत्पाद में मत्स्य पालन का योगदान लगभग एक प्रतिशत और कृषि सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 5.37 प्रतिशत है। लेकिन इसे पर्याप्त मात्रा में बढ़ाया जाना चाहिए।

श्री नायडू ने कहा कि जलीय कृषि क्षेत्र को विनियमन और आचार संहिता के जरिये सुव्यवस्थित किया जाना चाहिए और उल्लंघन पर उपयुक्त दंडात्मक प्रावधान किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि योजनाओं और आवंटन के साथ जलीय कृषि के विकास की दिशा में कार्य कर रहे संस्थानों की गतिविधियों और जिम्मेदारियों को परिभाषित किया जाना है ताकि अस्पष्टता और दोहराव से बचा जा सके। हमें विविध जलीय कृषि प्रजातियों और जलीय कृषि सम्पदाओं, चारा मिलों और सहायक उद्योगों की स्थापना में निवेश करने की भी जरूरत है।

उपराष्ट्रपति ने यह भी कहा कि करोड़ों की जनसंख्या वाले इस देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मछली उत्पादन को बढ़ावा देने की नितांत आवश्यकता है। उन्होंने कहा, चूंकि 16 प्रतिशत से अधिक पशु प्रोटीन की आपूर्ति मत्स्य क्षेत्र से होती है, लिहाजा इस क्षेत्र की पहचान खाद्य सुरक्षा में योगदान देने वाले प्रमुख कारक के रूप में की जाती है।

एमपीईडीए के अध्यक्ष श्री के.एस. श्रीनिवास, आईएएस ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि एएआई-2019 जलीय कृषि और आलंकारिक मत्स्य के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी हस्तक्षेप को जानने-समझने का एक अनूठा अवसर है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की कृषि निर्यात नीति का लक्ष्य 2022 तक देश के कृषि निर्यात को दोगुना कर 60 अरब डॉलर के लक्ष्य तक

उद्घाटन भाषण देते माननीय उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू

पहुंचाना है। इस सिलसिले में हमारे समुद्री उत्पाद हाल के दिनों में निर्यात के मोर्चे पर बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। 2018-19 के दौरान भारत ने 6.8 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य का 14,37,445 मीट्रिक टन समुद्री खाद्य निर्यात किया। श्रीनिवास ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका हमारा प्रमुख बाजार है और इसके बाद यूरोपीय संघ, दक्षिण पूर्व एशिया, चीन और जापान हैं।

मंच पर उपस्थित गणमान्य अतिथि

'पर्ल ब्रांड आर्टेमिया' का लोकार्पण करते माननीय उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू।

उन्होंने कहा कि तटवर्ती क्षेत्रों में श्रिम्प का जलीय कृषि उत्पादन एक दशक पहले 76,000 मीट्रिक टन था जो बढ़कर 2018-19 के दौरान 6,83,472 मीट्रिक टन तक पहुंच गया। देश में विदेशी श्वेत श्रिम्प (एल वन्नामेई) के उत्पादन की शुरुआत के बाद सफलता की एक अभूतपूर्व कहानी है। उन्होंने बताया कि 2021-22 तक जलीय कृषि के माध्यम से 11,00,000 मीट्रिक टन श्रिम्प उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

इस मौके पर तेलंगाना के पशुपालन एवं मत्स्य पालन मंत्री श्री तलसानी श्रीनिवास यादव ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य के गठन के बाद से ही मुख्यमंत्री श्री के. चंद्रशेखर राव ने मत्स्य पालन क्षेत्र को प्राथमिकता दी है। इस क्रम में एकीकृत मत्स्य विकास कार्यक्रम के लिए सौ प्रतिशत ग्रांट और 80 प्रतिशत अनुदान के जरिए किसानों को सहायता दी जा रही है। इसके अलावा पीएम सुरक्षा बीमा योजना के तहत मछुआरों को प्रति छह लाख रुपए बीमा सुविधा भी दी जा रही है।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने जलीय कृषि के विस्तार के उद्देश्य से किसानों के लिए पंजीकरण प्रक्रिया को सरल बनाया है और गुणवत्ता नियंत्रण तथा अनुसंधान व विकास जैसे उपायों पर जोर दिया है। आंध्र प्रदेश के पशुपालन और मत्स्य पालन मंत्री श्री मोपीदेवी वेंकटरामन ने श्रिम्प हैचरियों में जीवित चारे के महत्व पर चर्चा की और सुझाव दिया कि एमपीईडीए को रोग-मुक्त पॉलीकैथ वार्म के विकास में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए।

श्रिम्प, मछली और आलंकारिक मत्स्य के लिए जीवित चारा 'पर्ल ब्रांड 'आर्टेमिया' की लॉन्चिंग

कार्यक्रम स्थल पर उपराष्ट्रपति ने 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत स्वदेशी जीवित चारा 'पर्ल ब्रांड आर्टेमिया' को भी बिक्री के लिए जारी किया। इस उत्पाद को एमपीईडीए की ही एक इकाई 'राजीव गांधी सेंटर फॉर एक्वाकल्चर' (आरजीसीए) ने तैयार किया है और वहीं इसका विक्रय भी करेगी। श्रिम्प व मछली पालन केंद्रों में आर्टेमिया या लवणयुक्त श्रिम्प का चारे के रूप में व्यापक इस्तेमाल किया जाता है। वर्तमान में इसे अधिकतर संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन से आयात किया जाता है। इसके लिए हमें 300 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा

एएआई - 2019 के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात ऐसोसिएशन के अध्यक्ष वी. पद्मनाभम

खर्च करनी पड़ती है।

श्री नायडू ने इस मौके पर जलीय कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने वाले दस किसानों को पुरस्कार भी प्रदान किए। पुरस्कृत लोगों में केरल के पूर्व डीजीपी और रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के पूर्व प्रमुख श्री होर्मिस थाराकन भी शामिल थे जो कोच्चि के वल्लारपडोम स्थित एमपीईडीए के 'मल्टीस्पेसीज एक्वाकल्चर कॉम्प्लेक्स' से रोग मुक्त बीज का उपयोग कर ब्लैक टाइगर श्रिम्प की सफलतापूर्वक खेती कर रहे हैं। उपराष्ट्रपति ने स्मारिका और कार्यक्रम की सूची भी जारी की।

'पर्ल ब्रांड आर्टेमिया' को बिक्री के लिए जारी करते माननीय उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू

उद्घाटन सत्र में उपस्थित गणमान्यों में तेलंगाना के पशुपालन और मत्स्य मंत्री श्री तलसानी श्रीनिवास यादव, आंध्र प्रदेश के पशुपालन और मत्स्य मंत्री श्री मोपीदेवी वेंकट रामन, चेवेल्ला के सांसद डॉ. जी. रंजीत रेड्डी, राज्यसभा सांसद व एमपीईडीए के सदस्य श्री संजय राउत, संयुक्त सचिव- वाणिज्य विभाग श्री केशव चंद्रा, प्रधान सचिव- पशुपालन और मत्स्य विभाग तेलंगाना सरकार श्री संदीप कुमार सुल्तानिया और सीफूड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के प्रमुख श्री वी. पद्मनाभम शामिल थे।

जलीय कृषकों की सफलता की कहानियां

एएआई-2019 का एक पूरा सत्र जलीय किसानों को समर्पित था। किसानों की सफलता की कहानी उन्हीं की जुबानी सुनना इस सत्र का बेहद दिलचस्प अनुभव रहा। 01 सितंबर को आयोजित किए गए इस सत्र की अध्यक्षता आंध्र प्रदेश सरकार के मत्स्य पालन आयुक्त श्री राम शंकर नाइक, आईएएस ने की। सूरत स्थित श्रिम्प किसान और मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ. मनोज एम. शर्मा ने कहा कि जलीय कृषि क्षेत्र के मुख्य चालक किसान ही हैं। इस उद्योग को संवारना या मिटाना किसानों के ही हाथ में है। डॉ. शर्मा ने केज फार्मिंग के जरिये श्रिम्प उत्पादन करने वाले किसानों को प्रशिक्षण देने के लिए एक तकनीकी टीम तैयार की है। उन्होंने सुझाव दिया कि व्हाइट लेग श्रिम्प की खेती में अपनाए जाने वाले पुराने तरीके की बजाय ब्लैक टाइगर श्रिम्प की खेती के तरीके अपनाए जाएं। तालाबों में अनाप-शनाप तरीके से बीजों को भर देने से रोगाणुओं और जीवाणुओं का संक्रमण बढ़ने लगता है और श्रिम्प उत्पादन के साथ-साथ किसानों की आय पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। डॉ. शर्मा ने कहा कि वन्नामेई युग की शुरुआत के बाद से मत्स्य उद्योग के तमाम सहायक क्षेत्रों जैसे हैचरी, फीड मिल, एक्वा फार्मास्यूटिकल्स, रासायनिक कंपनियों, प्रसंस्करण इकाइयों और व्यापारियों ने अभूतपूर्व प्रदर्शन किया है लेकिन भारतीय श्रिम्प किसानों को यह समझना चाहिए कि हमारा 95 प्रतिशत श्रिम्प उत्पादन निर्यात बाजार पर निर्भर है और निर्यात बाजार में खाद्य सुरक्षा के मानदंड बहुत सख्त हैं क्योंकि बाजार उत्पाद की उच्च गुणवत्ता के प्रति अत्यधिक जागरूक है। इसीलिए किसानों को चाहिए कि वे बाजार की मांग के अनुरूप व्यावहारिकता को समझें और अंतरराष्ट्रीय खाद्य गुणवत्ता के सभी मानकों का पालन करें। डॉ. शर्मा ने सुझाव दिया कि एंटीबायोटिक के बिना श्रिम्प उत्पादन का एकमात्र संभव तरीका यह है कि इसे चिरस्थायी कृषि व्यवहार के माध्यम से एक तनावमुक्त वातावरण में उत्पादित किया जाए।

राजीव गांधी सेंटर फॉर एक्वाकल्चर (आरजीसीए) तिरुवनंतपुरम के परियोजना प्रभारी डॉ. जियो क्रिस्टी एपेन ने कहा कि जलीय कृषि क्षेत्र जिन प्रमुख चुनौतियों का सामना कर रहा है, उनमें जैव-संरक्षण का उल्लंघन, संक्रमित बीज, बेहतर प्रबंधन की कमी और तालाबों का अवैज्ञानिक प्रबंधन शामिल हैं। गुणवत्ता से समझौता किए जाने के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। इन सबके अलावा चारे की लागत भी बढ़ती जा रही है और हम ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं जहां बीज बनाने के लिए पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा उत्पादन लागत बढ़ रही है और किसानों का मुनाफा कम होता जा रहा है।

आरजीसीए स्टॉल

इस आयोजन की एक विशेष विशेषता राजीव गांधी सेंटर फॉर एक्वाकल्चर (आरजीसीए) द्वारा लगाए गए स्टॉल थे। इनमें मत्स्य पालन व्यवसाय के विविध रूपों और तकनीकों को प्रदर्शित किया गया था। आरजीसीए किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज

उपलब्ध करने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। उसने मड क्रैब के प्रजनन और बीज उत्पादन का मानकीकरण किया है जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में अत्यधिक मांग है। इस जिंस की हैचरी देश में अपनी तरह की एकमात्र सुविधा है।

आरजीसीए के परियोजना निदेशक डॉ. एस.कांदन ने कहा कि मत्स्य किसान इस क्षेत्र में मेक इन इंडिया कार्यक्रम के माध्यम से आशातीत सफलता हासिल कर सकते हैं और श्रिम्प पालन के साथ-साथ अपना दायरा अन्य मछलियों जैसे एशियन सीबास, कोबिया, स्कम्पी और तिलापिया के उत्पादन तक फैला सकते हैं। उन्होंने किसानों को सुझाव दिया कि उन्हें अपने व्यवसाय के विविधीकरण और उत्पादों का निर्यात बढ़ाने के लिए आरजीसीए जैसी प्रतिष्ठित अनुसंधान एजेंसी के पास उपलब्ध प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए।

पुरस्कार

सरकारी स्टॉलों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ स्टॉल का प्रथम पुरस्कार आंध्र प्रदेश के मत्स्य पालन विभाग ने प्राप्त किया जबकि तेलंगाना और महाराष्ट्र के मत्स्य विभाग क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे।

एमपीएडीए की शाखा राजीव गांधी सेंटर फॉर एक्वाकल्चर (आरजीसीए) को सर्वश्रेष्ठ एक्वाकल्चर स्टॉल के लिए विशेष पुरस्कार दिया गया।

प्राइवेट स्टॉलों की श्रेणी में ग्रोएल फीड्स प्रा. लिमिटेड ने पहला पुरस्कार जीता। दूसरा और तीसरा पुरस्कार क्रमशः अवंती फीड्स लिमिटेड और एबीआईएस एक्सपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड को मिला। एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, विशाखापत्तनम को प्रदर्शनी में अधिकतम स्टॉल लगाने के लिए पुरस्कृत किया गया जबकि विजयवाड़ा स्थित एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग इस श्रेणी में उपविजेता बना।

ये सभी पुरस्कार प्रदर्शनी के समापन पर अंतिम दिन एमपीईडीए के अध्यक्ष श्री के.एस. श्रीनिवास आईएएस के हाथों प्रदान किए गए। पुरस्कारों की घोषणा एसईएएफडीईसी / एक्यूडी फिलीपींस की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एमिलिया क्विन्टियो, एरिज़ोना विश्वविद्यालय अमेरिका के मृदा जल और पर्यावरण विज्ञान विभाग के प्रोफेसर केविन फिट्जमोन्स और केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशन साइंस के कुलपति प्रोफेसर ए. रामचंद्रन के पैनल ने की।

एवन्स एक्सपोजिशंस प्रा. लि. को प्रदर्शनी में मछली मॉडल के निर्माण के लिए स्मृति चिह्न दिया गया। प्रदर्शनी के एक भाग के रूप में सी-फूड उत्सव भी आयोजित किया गया था।

तकनीकी सत्र

एएआई-2019 के एक हिस्से के रूप में तकनीकी सत्रों की एक शृंखला भी आयोजित की गई। इसके तहत 'चिरस्थायी

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते आंध्र प्रदेश के पशुपालन और मत्स्य पालन मंत्री मोपीदेवी वेंकटरामन

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते तेलंगाना के पशुपालन और मत्स्य पालन तलसानी श्रीनिवास यादव

केरल के पूर्व पुलिस महानिदेशक होर्मिस थाराकन को पुरस्कार प्रदान करते महामहिम उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू

एएआई-2019 के उद्घाटन समारोह के दौरान खचाखच भरी दर्शक दीर्घा

उत्पादन और जलीय कृषि विविधीकरण' विषय पर परिचर्चा की अध्यक्षता सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिश वाटर एक्वाल्चर (CIBA) चेन्नई के निदेशक डॉ. के.के. विजयन ने की। इसी प्रकार 'वैश्विक श्रिम्प व्यापार में प्रमाणन व पहचान' विषयक सत्र की अध्यक्षता 'केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशन साइंसेज' के कुलपति ए. रामचंद्रन और 'नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज' लखनऊ के निदेशक डॉ. कुलदीप के. लाल ने की। इन सत्रों को भारत और विदेशों के नामचीन विशेषज्ञों ने संबोधित किया।

संयुक्त राज्य अमेरिका के एरिजोना विश्वविद्यालय के मृदा जल और पर्यावरण विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. केविन फिट्जमोन्स ने भारत में चिरस्थायी और विविधतापूर्ण फसल के रूप में 'तिलपिया उत्पादन' विषय पर सत्र को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि तिलापिया के लिए भारत में श्रमिक, जल, भूमि और चारा बहुतायत में उपलब्ध हैं और सरकारी नियम भी लागू हैं। बावजूद इसके देश को पर्यावरणीय पहलुओं के मद्देनजर फसल की कटाई, विपणन और उत्पादन प्रणाली में सुधार करना होगा। प्रो. केविन ने कहा कि सबसे पहले हमें एक बाजार योजना का निर्धारण करना होगा जिसमें स्थानीय बाजारों में लाइव फिश की बिक्री, समुद्री खाद्य के स्थापित थोक व्यापारी और सामान्य भारतीय घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार शामिल हों। विपणन के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, सामान्य उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादन के लिए सही मछली का चयन। उन्होंने बताया कि तिलापिया के लिए हाईब्रिड समेत कई प्रजातियां और प्रजनन कार्यक्रम उपलब्ध हैं।

एक अन्य सत्र में पिनांग (मलेशिया) में 'वर्ल्डफिश' के एक प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. सी.वी. मोहन ने तिलापिया को 'भविष्य की मछली' बताया और कहा कि यदि बांग्लादेश और मिस्त्र जैसे मुल्कों के पिछले एक दशक के उत्पादन को देखें तो भारत 'तिलपिया' में अगला बड़ा खिलाड़ी बन सकता है।

उन्होंने कहा कि भारत को तिलपिया के रूप में ने उपभोक्ताओं के लिए एक किफायती मछली के उत्पादन के साथ ही लघु एवं मध्यम उद्योगों में रोजगार के अवसर पैदा करने का एक स्वीकार्य अवसर हासिल हुआ है। भारत 10 साल के भीतर संभवत: एक मिलियन टन के उत्पादन का लक्ष्य हासिल कर सकता है। उन्होंने कहा कि तिलापिया में देश की पोषण संबंधी समस्या के समाधान की भी क्षमता है।

डॉ. मोहन ने हालांकि सावधानी बरतने की सलाह देते हुए कहा कि यद्यपि खेती योग्य तिलपिया में किसी बड़ी बीमारी की अब तक कोई सूचना नहीं है खेती की गहनता के साथ रोगजनकों का भी उदय हो रहा है जो कि उत्पादन में भारी नुकसान का सबब बन सकता है। विशेष रूप से हाल में उत्पन्न 'तिल-वी' ने तिलपिया के स्वास्थ्य और जैव-सुरक्षा संबंधी पहलू पर दुनिया का ध्यान खींचा है।

'आईओटी एवं एएल के जरिये श्रिम्प खेती में प्रभावी मूल्य शृंखला' पर आयोजित सत्र में सावित्री एक्वामोंक के सीईओ श्री क्रांति चंद ने उनकी हैदराबाद स्थित कंपनी द्वारा विकसित किए गए मोबाइल व वेब एप के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस ऐप को एक्वामोंक नाम दिया गया है। यह कुल कृषि उपज के विश्लेषण के लिए फसल पर नजर रखने में मदद कर सकता है। यह सभी तालाबों के डेटा, दैनिक संचालन, बायोमास विकास और फसल डेटा रिकॉर्ड की जानकारी देता है। इस प्रकार यह एक्वाफार्म के संचालन की निगरानी और ट्रैकिंग की सख्त प्रक्रिया को आसान बनाता है।

'स्वस्थ श्रिम्प और तालाब का विनियमन' जैसे अहम विषय पर स्कूल ऑफ ओशन एंड अर्थ साइंस, यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथैम्पटन, यूके के प्रो. क्रिस हाटन ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि बेहतर प्रबंधन व्यवहार स्वस्थप फसल का उत्पादन करने और रासायनिक उपचार की आवश्यकता से बचने का सबसे अच्छा तरीका है। उनके अनुसार तालाब की स्थिति के बारे में जागरूकता से बीमारी के जोखिम और रासायनिक उपचार को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है।

'खाद्य सुरक्षा और पता लगाने की क्षमता: वैश्विक श्रिम्प व्यापार में अपरिहार्य' विषय पर सत्र को संबोधित करते हुए नेशनल चैंबर, इक्वाडोर की कार्यकारी निदेशक डॉ. येरा पेड्राइड ने कहा कि भारत के कंधों पर स्थानीय और विदेशी उपभोक्ताओं को सुरक्षित समुद्री खाद्य उत्पादों की आपूर्ति की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि इक्वाडोर अपने कुल समुद्री खाद्य निर्यात का 68 प्रतिशत चीन को निर्यात करता है। डॉ. येरा के मुताबिक व्यापार के लिए गुणवत्ता नियंत्रण और ट्रेसबिलिटी अपरिहार्य आवश्यकताएं हैं। अतः भारत में जोखिमों का प्रबंधन करने और लाभों का आनंद उठाने के लेने के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों ही क्षेत्रों में गुणवत्ता संस्थानों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि घरेलू समुद्री खाद्य के घरेलू विनियमन के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जोखिम विश्लेषण पर आधारित इन मानकों के लिए सर्वोत्तम व अद्यतन वैज्ञानिक सलाह का उपयोग किया गया है।

'भारत से समुद्री खाद्य के निर्यात में जलीय कृषि का महत्व' विषय पर एमपीईडीए, कोच्चि के संयुक्त निदेशक (विपणन) डॉ. एम. के. राम मोहन ने कहा कि निर्यातोन्नमुख जलीय कृषि में श्रिम्प का वर्चस्व जारी है। साल 2018 में वैश्विक समुद्री खाद्य निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 6.82 अरब अमेरिकी डॉलर थी। इसमें 87 प्रतिशत हिस्सा फ्रोजन श्रिम्प का था जो कि पांच बाजारों को निर्यात किया जाने वाला प्रमुख सामान था।

डॉ. राम मोहन ने बताया कि ऑस्ट्रेलिया, सऊदी अरब, कुवैत, थाईलैंड और कनाडा जैसे बाजारों में जैव सुरक्षा संबंधी मुद्दे हैं। सऊदी अरब जैसे देशों ने भी रोगजनक उपस्थिति का हवाला देते हुए कच्चे माल के रूप में जीवित मछलियों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया है। आयातकर्ता देशों ने

एंटीबायोटिक्स और अन्य प्रतिबंधित औषधीय अवशेषों के कारण सतर्कता बढ़ा दी है। यूरोपीय संघ ने भी जलीय कृषि के माध्यम से उत्पादिक श्रिम्प की खेपों का परीक्षण बढ़ा दिया है। जापान ने एंटीबायोटिक दवाओं की उपस्थिति का पता लगाने के लिए शत-प्रतिशत परीक्षण प्रणाली लागू की है। इन मुद्दों को किसानों और निर्यातकों को गंभीरता से लेना होगा।

डॉ. मोहन ने बताया कि एमपीईडीए ने इस संबंध में 11 ईएलआईएसए प्रयोगशालाओं की स्थापना की है जिनमें बहुत कम कीमत पर श्रिम्प में एंटीबायोटिक्स के अवशेषों का पता लगाया जा सकेगा। कोच्चि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर जल्द ही 'इंडियन सीफूड सिग्नेचर स्टाल' स्थापित होने वाला है और देश के अन्य भागों में भी ऐसे ही सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने की योजना है।

'विविधीकरण के दौर में चिरस्थायी जलीय कृषिः सफल एशियाई उदाहरण' पर अपनी प्रस्तुति में एशियाई प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंकॉक के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. कृष्णा आर. सालिन ने कहा कि जलीय कृषि सबसे तेजी से बढ़ता खाद्य क्षेत्र है। इसमें 90 प्रतिशत की भागीदारी के साथ एशिया पहले नंबर पर है। कुल उत्पादन की दृष्टि से इस सूची में चीन का 61.5 प्रतिशत के साथ सबसे ऊपर है और इसके बाद भारत (7.1 प्रतिशत) है।

उन्होंने कहा कि कृषि की तुलना में जलीय कृषि में प्रजातियों की विविधता कम है। विविधीकरण के लिए हमें प्रजातियों की संख्या बढ़ानी होगी। साथ ही अन्य तरीके अपनाने होंगे, जैसे कि खेती को विविध वातावरण में फैलाना, आनुवंशिक सुधार और देशी प्रजातियों का वर्चस्व। डॉ. सालिन के अनुसार कम पूंजी निवेश, बेहतर खेत प्रबंधन, उच्च उत्पादकता और बाजार की मांग जलीय कृषि को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाते हैं।

अन्य वक्ताओं में डॉ. डी. कैनो भी थी जिन्होंने थाईलैंड में श्रिम्प से संबंधित रोगजनकों के अनुसंधान पर एक अद्यतन जानकारी दी और खेत स्तर पर ही निवारक उपायों का सुझाव दिया। आरजीसीए के परियोजना निदेशक डॉ. एस कांदन ने भारत में कृषक समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर श्रिम्प रोगों के प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया और उपचारात्मक उपाय भी सुझाए।

कोच्चि स्थित सीएमएफआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुनील के. मोहम्मद ने भारत में जलीय कृषि के चिरस्थायी विस्तार के लिए एक्वाकल्चर स्टीवर्डशिप काउंसिल (एएससी) के प्रमाणन की आवश्यकता पर जोर दिया। गुड़िवाड़ा स्थित सावित्री एक्वामोंक के दिलीप कुमार मुनांगी ने आईओटी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के माध्यम से श्रिम्प की खेती में प्रभावी मूल्य शृंखला शुरू करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

फिलीपींस की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एमिलिया क्विनशियो ने मैंग्रोव केकड़ा उत्पादन को बढ़ाने के लिए पारंपरिक और नई विधियों के उपयोग की चर्चा की जबकि जबकि ऑस्ट्रेलियाई अनुसंधान संस्थामन के निदेशक डॉ.सागिव कोलॉकोवस्की ने भारत में जलीय कृषि व आलंकारिक मछली उद्योग के लिए टिकाऊ रियरिंग सिस्टम और रीसर्क्युलेटिंग एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस) की वकालत की।

यूनिमा-एक्वालमा, मेडागास्कर के प्रबंध निदेशक डॉ. वी. मानवेंद्र राव ने ब्लैक टाइगर श्रिम्प उत्पादन और मूल्यवर्धन में सफलताओं की विस्तारपूर्वक चर्चा की। टेमसेक पॉलिटेक्नीक, सिंगापुर के प्रोफेसर ली विलियम्स ने जीवित श्रिम्प और मत्स्य परिवहन के बारे में बताया। पीटी सीपी प्राइमा, इंडोनेशिया के उप प्रमुख डॉ. राजीव कुमार झा ने श्रिम्प के उभरते रोगों से लड़ने के लिए प्रौद्योगिकी सुधार के बारे में जानकारी दी।

तकनीकी सत्र

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिश वाटर एक्वाल्चर (CIBA) चेन्नई के निदेशक डॉ. के.के. विजयन

केकड़ा उत्पादन की विशेषज्ञ फिलीपींस की वरिष्ठ वैज्ञानिक (अवकाश प्राप्त) डॉ. एमिलिया क्विनशियो

एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, बैंकॉक के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. कृष्णा सालिन

तकनीकी सत्र

माहिडोल विश्वविद्यालय, थाईलैंड में जैव रसायन विभाग की फेलो रिसर्चर डॉ. डी.जे. अल्डमा कैनो

नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज (NBFGR) लखनऊ, यूपी के निदेशक डॉ. कुलदीप के. लाल

एपीईडीए, कोच्चि के संयुक्त निदेशक (वाणिज्य) डॉ. एम. के. राम मोहन

वर्ल्ड फिश सेंटर, मलयेशिया के डॉ. सी. बी. मोहन

पीटी सीपी प्राइमा, इंडोनेशिया के उप प्रमुख डॉ. राजीव कुमार झा

नेशनल चैंबर, इक्वाडोर की कार्यकारी निदेशक डॉ. येरा पेड्राइड

स्कूल ऑफ ओशन एंड अर्थ साइंस, यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथैम्पटन, यूके के प्रो. क्रिस हाटन

ऑस्ट्रेलियाई अनुसंधान संस्था, न के निदेशक डॉ. सागिव कोलॉकोवस्की

गुड़िवाड़ा स्थित सावित्री एक्वामोंक के दिलीप कुमार मुनांगी

आरजीसीए के परियोजना निदेशक डॉ. एस. कांदन

केरला यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एण्ड ओशन साइंस के कुलपति प्रो. ए. रामचंद्रन

तकनीकी सत्र

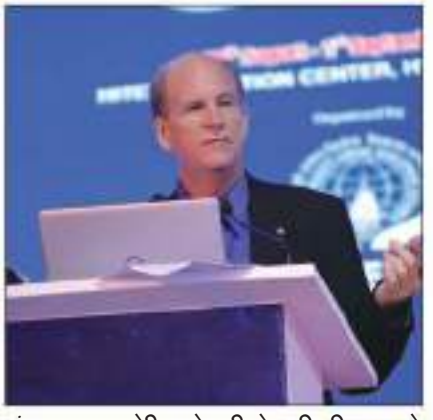

संयुक्त राज्य अमेरिका के एरिजोना विश्वविद्यालय के मृदा जल और पर्यावरण विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. केविन फिट्जमोन्स

यूनिमा-एक्वालमा, मेडागास्कर के प्रबंध निदेशक डॉ. वी. मानवेंद्र राव

मैरीन कन्जर्वेशन प्रोग्राम, डब्लूडब्लूएफ-इंडिया के समन्वयक विनोद मलाइलेथु

नेशनल सेंटर फॉर सस्टनेबल एक्वाकल्चर, काकेनाड़ा के सीईओ के. षणमुख राव

सोसायटी फॉर एक्वाकल्चर प्रोफेशनल्स के अध्यक्ष डॉ. रविकुमार येल्लां की

आंध्र प्रदेश सरकार के मत्स्य आयुक्त रामा शंकर नाइक, आईएएस

सीआईबीए, चेन्नई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. के. अंबाशंकर

सीआईबीए, चेन्नई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. के.पी. जितेन्द्रन

देवी सी-फूड्स लिमिटेड, विशाखापट्टनम के महाप्रबंधक तथा गुणवत्ता व प्रमाणन के प्रभारी सरबप्रीत सिंह

समारोह की झलकियां

समारोह की झलकियां

समारोह की झलकियां

समारोह की झलकियां

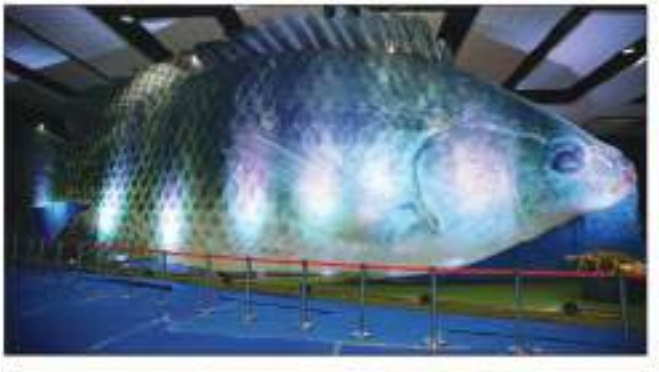

समारोह की झलकियां

भारत में जलीय कृषि की अपार क्षमता का उपयोग जरूरी

एमपीईडीए के तत्वाधान में आयोजित एक्वा एक्वेरिया इंडिया-2019 में माननीय उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू के उद्घाटन भाषण की खास बातें

प्रकृति ने भारत को अनेक उपहारों से समृद्ध किया है। हमारे पास विपुल जल संसाधन हैं और मत्स्य जीवों का विविध संसार भी है। हमारे देश में मछली की करीब 2,200 प्रजातियां हैं जो कि विश्व में अब तक ज्ञात कुल प्रजातियों का करीब 11 प्रतिशत है।

8,000 किलोमीटर का विस्तृत समुद्री तट, 22 लाख वर्ग किलोमीटर का विशेष आर्थिक क्षेत्र और 5 लाख वर्ग किलोमीटर के महाद्वीपीय चट्टानी क्षेत्र के साथ ही भारत में अनुमानतः 39 लाख मीट्रिक टन के मत्स्य संसाधन हैं जिनमें से केवल 31 लाख मीट्रिक टन का ही दोहन हो पाता है। इसका मतलब यह है कि इन संसाधनों के दोहन की बहुत गुंजाइश है।

जलीय कृषि के लिए उपयुक्त खारे पानी के रूप में लगभग 12 लाख हेक्टेयर और मीठे पानी के रूप में करीब 54 लाख हेक्टर क्षेत्र हमारे देश में उपलब्ध हैं। ये विपुल और विविध जल संसाधन भारत को जलीय कृषि के विस्तार और खाद्य मछली के उत्पादन का सर्वोत्तम अवसर प्रदान करते हैं।

अप्रयुक्त क्षमता

मछली उत्पादन के लिए जलीय कृषि को बढ़ावा देना वैश्विक स्तर पर सबसे अच्छा विकल्प माना जा रहा है और वह इसलिए कि पारंपरिक क्षेत्र में हो रहे उत्पादन में जड़ता आ चुकी है। यह गहन चिंता का विषय है कि भारत अब तक अपनी जलीय कृषि क्षमता का अंश भर ही दोहन कर सका है। भारत जलीय कृषि के लिए 23 लाख 60 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में उपलब्धि तालाबों व टैंकों के सिर्फ 40 प्रतिशत मीठे जल और 12 लाख हेक्टेयर में उपलब्धज खारे जल के सिर्फ 15 प्रतिशत हिस्से का ही उपयोग कर पाता है। हमें अपने इन संसाधनों का समुचित उपयोग सुनिश्चित करना होगा। इन संसाधनों के चौमुखी विस्तार की बहुत गुंजाइश है। इसके अलावा लगभग 8000 किमी की तटरेखा के साथ 'सागरीय कृषि' के विकास की भी अपार संभावना है। सागरीय कृषि ने हाल के वर्षों में अच्छी जड़ें जमा ली हैं।

आय और रोजगार सृजन के मद्देनजर सामाजिक-आर्थिक विकास में जलीय कृषि के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों में अप्रयुक्त या अल्पप्रयुक्त संसाधनों का भरपूर उपयोग आवश्यक है। ध्यान रहे कि पर्यावरण-अनुकूल जलीय कृषि को ग्रामीण विकास के एक संवाहक के रूप में स्वीकार किया गया है। यह उद्यम ग्रामीण जनता को खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में सहायक है।

ग्रामीण धन सृजन

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आजादी के बाद हमने ग्रामीण क्षेत्रों को नजरअंदाज किया और ध्यान शहरी क्षेत्रों में चला गया। शहरीकरण अब एक वास्तविकता है। मैं नहीं चाहता कि हम फिर से उलटा चलें, लेकिन हमें ग्रामीण क्षेत्रों में रह रही जनता का ध्यान रखना होगा। जलीय कृषि ग्रामीण लोगों की संपत्ति बढ़ाने के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान करती है।

हम भारतीयों द्वारा अपनाई जा रही मीठे पानी की जलीय कृषि प्रणाली सालाना 1.5 से 4.5 टन / हेक्टर / तक उपज दे रही है। चीन और इस्त्राइल जैसे देशों में यही उत्पादकता 10-15 टन / हेक्टर / प्रतिवर्ष है। जाहिर है

> आज 2018-19 के भारत में 13.70 मिलियन मीट्रिक टन मत्स्य के साथ दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक है। भारत से कुल निर्यात में मत्स्य क्षेत्र का योगदान लगभग 10 प्रतिशत है और 17-18 में यह कृषि निर्यात का लगभग 20 प्रतिशत है।

उनकी तुलना में हम बहुत पीछे हैं। अगर चीन 10-15 टन का उत्पादन कर सकता है, तो भारत क्यों नहीं ? उद्योग और अनुसंधान क्षेत्र को इस बारे में सोचना होगा। उन्हें नए विचारों और नई योजनाओं के साथ आगे आकर हमारे किसानों को प्रोत्साहित करना चाहिए। हमारे देश में 10-15 टन व्यावसायिक उत्पादन के लक्ष्य का सपना अभी बाकी है। सपनों को सच करने के लिए हमें उच्च लक्ष्य, कड़ी मेहनत और सर्वोत्तम उदाहरणों का अनुसरण करना चाहिए।

भारत कहां खड़ा है

जैसा कि आप जानते हैं, मत्स्य पालन और जलीय कृषि गतिविधियों में शामिल विश्व की 85 प्रतिशत आबादी एशियाई है। भारत में मत्स्य पालन को विकास की अपार संभावनाओं वाले क्षेत्र के रूप में आजादी के बाद 1947 में मान्यता मिली। वर्ष 1950 में मशीनीकरण की शुरुआत हुई जिसने फसल और कटाई के बाद की गतिविधियों में क्रांति ला दी।

आज 2018-19 के भारत में 13.70 मिलियन मीट्रिक टन मत्स्य के साथ दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक है। भारत से कुल निर्यात में मत्स्य क्षेत्र का योगदान लगभग 10 प्रतिशत है और 17-18 में यह कृषि निर्यात का लगभग 20 प्रतिशत है।

मत्स्य उत्पादों के निर्यात से 7 अरब अमेरिकी डॉलर की कमाई के साथ भारत विश्व में मछली का चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है। 47,600 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के समुद्री उत्पादों के निर्यात के अलावा यह क्षेत्र भारतीय समुद्री तट के सुदूरवर्ती गांवों में रहने वाले 14.5 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है।

हमारे सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी में मत्स्य पालन का योगदान लगभग एक प्रतिशत है और कृषि जीडीपी में लगभग 5.3 प्रतिशत। समुद्र से मछली पकड़ने और खारे व मीठे पानी में मछली पालन के माध्यम से विश्व मछली उत्पादन लगभग 178.8 मिलियन मीट्रिक टन होने का अनुमान है। इसमें से खाद्य मछली का उत्पादन 157.9 मिलियन मीट्रिक टन होने का अनुमान है।

विविधता

मछली की निरंतर बढ़ती आवश्यकता की पूर्ति के लिए हमें एक ओर जलीय कृषि की आधुनिक तकनीक और विविधीकरण पर बल देना होगा, वहीं कम नुकसान और मूल्यवर्धन पर भी ध्यान देना होगा। विविधीकरण की दिशा में केज आधारित उत्पादन एक अच्छा विकल्प है। इसके तहत हम तैरते केज और एक ही स्थान पर स्थापित किए गए केज, दोनों तरीकों का उपयोग कर सकते हैं। विविधता आधारित हमारी जलीय कृषि उपयुक्त स्थान पर बांधों के जरिये उत्पादन का भी विकल्प उपलब्धल कराती है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में अच्छी मांग वाली तिलापिया जैसी प्रजातियों की विविध तरीके से खेती की जा सकती है। इसके लिए मीठे जल का उपयोग करते हुए गहन, अर्द्ध-गहन तालाब प्रणाली, केज प्रणाली इत्यादि को अपनाया जा सकता है।

वर्तमान में तट आधारित जलीय कृषि प्रणाली का प्रमुख उत्पाद श्रिम्प है। इस प्रजाति का उत्पादन ज्यादातर निर्यात के लिए किया जाता है। हमारे यहां 90 के दशक के आरंभ में इसके वाणिज्यिक उत्पादन की शुरुआत हुई और वर्ष 2017-18 के दौरान 7 लाख मीट्रिक टन के साथ इसका उत्पादन चरम पर पहुंच गया। श्रिम्प की खेती में यह शानदार उपलब्धि भारत सरकार द्वारा विशिष्ट सफेद श्रिम्प के उत्पादन की अनुमति के कारण ही प्राप्त की जा सकी। इसके पीछे यह उद्देश्य था कि वैश्विक बाजार की मांग के मद्देनजर इस प्रजाति की क्षमता का बेहतर उपयोग किया जाए।

अधिकांश देश उन्नत प्रौद्योगिकी अपनाकर मछली उत्पादन बढ़ा रहे हैं। वैश्विक स्तर पर यह बात लोगों की समझ में आ गई है कि समुद्र से मछली पकड़ना मात्रात्मक दृष्टि से भविष्य की कोई आस नहीं जगाता अध्ययनों से पता चलता है कि 90 के दशक के मध्य में मछली पकड़ने का वैश्विक चलन अपने चरम पर था जो कि कम होता चला गया है। आगामी वर्षों में इसमें 6 प्रतिशत और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में 11 प्रतिशत तक की गिरावट का अनुमान है। हमें अपने भावी दृष्टिकोण को समुद्र में मछली पकड़ने के प्रयासों को बढ़ाने पर नहीं, बल्कि घटते मत्स्य संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर केंद्रित करना चाहिए।

विपणन समाचार

खाद्य सुरक्षा

दुनिया की आबादी लगातार बढ़ रही है और बढ़ती खाद्य मांग ने मौजूदा खाद्य संसाधनों पर दबाव और बढ़ा दिया है। हमारी विशाल आबादी की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मछली उत्पादन को बढ़ावा देने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। चूंकि 16 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन की आपूर्ति मत्स्य क्षेत्र से होती है, लिहाजा इस क्षेत्र की पहचान खाद्य सुरक्षा में योगदान देने वाले प्रमुख क्षेत्र के रूप में की जाती है।

खाद्य मछली की प्रति व्यक्ति वैश्विक खपत अनुमानतः 20.7 किलोग्राम प्रति वर्ष है। इसमें जलीय कृषि का योगदान 11.4 किलो या 55 प्रतिशत है। बाकी की पूर्ति समुद्र व अन्य प्राकृतिक जल संसाधनों से पकड़ी जाने वाली मछलियों से होती है।

निसंदेह हमारे देश में खाद्य सुरक्षा है लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी आबादी बढ़ रही है। भोजन की हमारी आदतें बदल रही हैं। हम जो खा रहे हैं, उसमें प्रोटीन की कमी है। हमें प्रोटीन युक्त भोजन की आवश्यकता है। तमाम चिकित्सा मानकों के अनुसार मछली उच्च प्रोटीन, कम वसा और उपयोगी भोजन है।

विकास के जुड़वा स्तंभ

हमें जिम्मेदार मत्स्य उद्योग में अनिवार्य रूप से 'एफएओ कोड' का पालन करना चाहिए। मत्स्य उद्योग में संसाधनों की स्थिरता के लिए मजबूत प्रबंधन और संरचना जरूरी है। तभी आप विनियमन और निगरानी के साथ एक प्रगतिशील जवाबदेह मत्स्यक उद्योग संचालित कर सकते हैं। सीमित संसाधनों, विशेष रूप से लुप्तप्राय समुद्री प्रजातियों के गैरजिम्मेदाराना शोषण को सख्ती से रोका जाना चाहिए। हमें समुद्र और मृदुजल संसाधनों में प्रदूषण के बढ़ते खतरों से भी निपटना है। प्लास्टिक, आवासीय कचरा और औद्योगिक संयंत्रों से रिसने वाले रासायन व कीटनाशक अंततः हमारे जलस्त्रोतों में जा मिलते हैं। इससे जलीय जीवन के लिए विनाशकारी परिणाम सामने आ रहे हैं। जलीय जीवों के आवास और उनका जीवनचक्र पहले ही ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसे खतरों के घातक प्रभाव में है। इन तमाम नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए सभी प्रकार की खाद्य प्रणालियों के संदर्भ में सम्मलित प्रयासों की जरूरत है ताकि जलवायु परिवर्तन का सामना किया जा सके। हमें अपने भावी मत्स्य पालन उद्योग को स्थिरता और संरक्षण जैसे जुड़वां स्तंभों पर खड़ा करना चाहिए।

कृषकों को अधिकतम लाभ

यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि मछली चाहे समुद्र से पकड़ी जा रही हो या इसकी खेती की जा रही हो, दोनों ही स्थितियों में अधिकांश लाभ प्राथमिक निर्माता तक पहुंचना चाहिए। यही हमारा कर्तव्य भी होना चाहिए। अक्सर शिकायत यह मिलती है कि किसानों को उनका हक नहीं मिल रहा है और बिचौलिए उनका शोषण कर रहे हैं। यह भी बताया जाता है कि मछुआरों को उनके उत्पादन का सिर्फ 30 प्रतिशत लाभ मिल पाता है, बाकी 70 प्रतिशत फायदा अन्य ले जाते हैं। किसान जो प्राथमिक उत्पादक हैं, उसे उसके प्रयासों के लिए अधिकतम हिस्सा मिलना चाहिए। सरकार और एमपीईडीए जैसे उसके संगठनों को यह देखना होगा कि मछुआरों को उनका हक मिले। हमें उन प्रयासों पर विशेष बल देने की जरूरत है जिनसे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सकता हो।

इस दिशा में कई कदम उठाने की आवश्यकता है, जैसे- बिचौलियों की भूमिका को कम करना, फसल बीमा प्रदान करना, ऋण तक पहुंच बढ़ाना, कोल्ड चेन विकसित करना, बेहतर बाजार संपर्क, फसल कटाई के बाद के भंडारण और मूल्य संवर्धन का बुनियादी ढांचा प्रदान करना इत्यादि। मत्स्य पालन क्षेत्र के बारे में सभी जानकारियां इंटरनेट पर उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि देश के हर हिस्से से मछुआरे इनका लाभ उठा सकें। उदाहरण के लिए हैदराबाद में एक मछली उत्पादक को यह जानने में सक्षम होना चाहिए कि दिल्ली में मछली किस भाव बिक रही है।

मुझे मालूम है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी) जैसे संगठनों के साथ-साथ एशियाई मत्स्य सोसायटी जैसे अनेक गैर-सरकारी संगठनों के मातहत मत्स्य अनुसंधान संस्थाएं उत्पादकों को सभी आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान कर रही हैं लेकिन इस दिशा में अभी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है।

मत्स्य और जलीय कृषि एक बहु-अनुशासित विषय है जिसमें वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों को एक टीम के रूप में काम करना पड़ता है। अनुसंधान एवं विकास का वृहत्तर सहयोग, संबंधित एजेंसियों के बीच सशक्त संपर्क और मछली व श्रिम्प हैचरियों में अधिक निवेश के साथ-साथ जिन क्षेत्रों को विकास की गति बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण माना गया है उनमें हैं - विविध जलीय कृषि प्रजातियां और जलीय कृषि संपदा के रूप में चारा मिल व सहायक उद्योगों की स्थापना इत्यादि। सागरीय कृषि के लिए अपतटीय क्षेत्रों के उपयोग पर नीतिगत निर्णयों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री ने कृषि से पशुपालन और मत्स्य पालन को अलग रखा है। उन्होंने एक अलग मंत्रालय बनाया ताकि इस क्षेत्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जा सके। कृषि को विभिन्न उप-क्षेत्रों के साथ नियमों की एक आचार संहिता से बांधा जाना चाहिए

जिसमें उल्लघंन की सूरत में उपयुक्त दंड का प्रावधान भी हो।

विभिन्न संयंत्रों और स्थलों पर जलीय कृषि विकास की दिशा में कार्य कर रहे विभिन्नम संस्थांनों की गतिविधियों और जिम्मेदारियों में अस्पष्टता और दोहराव को रोकने के लिए इन्हें परिभाषित किया जाना जरूरी है। भारत सरकार अर्थव्यवस्था में बदलाव के अग्रणी मोर्चे पर है और उसने कम लागत के साथ उत्पादन, उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार के जरिये 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य रखा है। लेकिन प्रधानमंत्री का वक्तव्य और कुछ नीतिगत सूत्र अकेले दम पर कुछ नहीं कर सकते जब तक कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए हम सभी एकसाथ मिलकर अपनी ऊर्जा नहीं लगाएंगे।

मत्स्य पालन और इससे जुड़े किसानों के लिए एक अच्छी कीमत प्रणाली का आश्वासन मिलना चाहिए। हमें साथ ही साथ मत्स्य क्षेत्र में अनुकरणीय बदलाव के लिए इसे आवश्यक गति प्रदान करनी चाहिए। इसके लिए बहुस्तरीय रणनीतियों और हस्तक्षेपों को अपनाने की तात्कालिक आवश्यकता है।

दुर्भाग्य से कृषि अस्थिर हो रही है और लोग सरकारी नौकरियों की तलाश कर रहे हैं। इसलिए हमें यह देखना होगा कि कृषि क्षेत्र मत्स्य पालन, जलीय कृषि, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि विविधताएं ग्रहण करे। मूल्य संवर्धन के माध्यम से अधिक से अधिक लोग खेती के आदर्श पेशे को अपनाने के लिए आगे आएं, इसीलिए हमारे नेताओं ने नारा दिया है- जय जवान जय किसान और जय विज्ञान।

21वें जापान इंटरनेशनल सीफूड एंड टेक्नॉलजी एक्सपो (जेआईएसटीई) में भारत ने पेश किए अपने प्रमुख उत्पाद

जापान सीफूड मार्केट

जापान में 2017 में मत्स्य उत्पादों को पकड़ कर और उनका पालन कर 3.80 मिलियन टन उत्पाद प्राप्त किए गए थे जिसमें पकड़े गए मत्स्य उत्पादों की हिस्सेदारी 84 फीसद है (ग्लोबफिश, 2019)। विश्व में मछली उत्पादन में जापान का आठवां स्थान है। जापान के स्थानीय समुदायों को भोजन में प्रोटीन मुहैया करवाने का महत्वपूर्ण स्त्रोत मत्स्य उत्पाद है। जापान के 90 फीसद मत्स्य उत्पादों का इस्तेमाल घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता है। जापान के आयात की तुलना में उसका निर्यात कम है। जापान से 0.56 मिलियन टन मत्स्य उत्पादों का निर्यात किया जाता है जिसका मूल्य अमेरिकी डॉलर में 2.3 बिलियन है। निर्यात की जाने वाली मछली की प्रमुख प्रजातियों में मैकेरल, स्कैलप्स, सैलमन, ट्राउट, टूना, सी कूकम्बर, मसैल्स और मोती हैं जिन्हें हांगकांग, अमेरिका, चीन, वियतनाम, ताइवान और थाईलैंड आदि देशों को भेजा जाता है।

अमेरिका और चीन के बाद मत्स्य उत्पादों का विश्व में सबसे बड़ा आयातक जापान है (ग्लोबफिश, 2019)। जापान ने साल 2018 में 128 देशों से 2.36 मिलियन टन मत्स्य उत्पाद आयात किए थे जिसकी कीमत अमेरिकी डॉलर में 15.2 बिलियन डॉलर थी। जापान को मुख्य तौर पर मछली चीन मुहैया करवाता है। इसके बाद जापान को मछली मुहैया करवाने में अमेरिका, चिली, रूस, वियतनाम और थाईलैंड आदि देश आते हैं। मछली की प्रजातियों में जापान मुख्यतौर पर श्रिम्प, टूना, ऑक्टोप्स, ट्राउट व सैलमन और उनके प्रसंस्करित उत्पादों का आयात करता है। जापान बहुतायत सुरीमी का आयात करता है और उससे विभिन्न उत्पाद बनाता है। दुनियाभर के मत्स्य क्षेत्र के लिए जापान खास स्थान रखता है क्योंकि जापान की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और खानपान में मछली विशेष स्थान रखती है। दुनियाभर में मछली के प्रमुख ग्राहकों में जापान के लोग हैं (साल 2014 में प्रति व्यक्ति मछली का उपयोग 27.3 किलोग्राम था)। जापान के बाजार में आयातित मछली की हिस्सेदारी बढ़ने से धीरे - धीरे मछली की आपूर्ति में बदलाव आ रहा है। यह वो बाजार है जो निरंतर गुणवत्ता वाले उत्पादों की मांग करता है। अन्य बाजारों की अपेक्षा जापान के बाजार में अवशेषों व संक्रमण को लेकर ज्यादा सख्ती है। इसके अलावा सबसे आखिर में इस्तेमाल करने वाला उपभोक्ता भी मछली के उद्गम स्थल, स्वाद और उत्पाद की प्रस्तुति को लेकर जागरूक है। टोक्यो 2020 में ओलंपिक आयोजित कर रहा है। लिहाजा जापान की अर्थव्यवस्था और कारोबार आने वाले महीनों और उसके बाद के समय में मछली की

मांग को लेकर और सकारात्मक होगा। ओलंपिक के कारण समुद्री खाद्य उत्पादों की खपत और बढ़ने की उम्मीद है। जापान के उपभोक्ता बदलती जीवनशैली और पारिवारिक ढांचे के कारण रेडी टू कूक या रेडी टू इट मूल्यवर्धित उत्पादों को अधिक प्राथमिकता देने लगे हैं। फूड मैकर रोजाना की जरूरत के अनुसार खाने की नई किस्में मुहैया करवाने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।

साल 2018 में चैप्टर 03 (तालिका 1) के अंतर्गत देश ने 11.86 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के समुद्री खाद्य पदार्थ का आयात किया था। चैप्टर की मद 1604 और 1605 (तालिका 2 और 3) के अंतर्गत चीन ने 1.69 बिलियन अमेरिकी डॉलर और 1.46 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के समुद्री खाद्य पदार्थों का आयात किया था।

तालिका 1. चैप्टर 03 के अंतर्गत मत्स्य व मत्स्य उत्पादों का आयात

(मिलियन अमेरिकन डॉलर में मूल्य)

निर्यातकों के नाम	साल 2014 में आयात का मूल्य	साल 2015 में आयात का मूल्य	साल 2016 में आयात का मूल्य	साल 2017 में आयात का मूल्य	साल 2018 में आयात का मूल्य
विश्व	11450350	10243438	10795761	11725233	11864088
संयुक्त राज्य अमेरिका	1217274	1260555	1175618	1406687	134949
चिली	1296444	1027352	1009420	1304755	1290584
चीन	1107422	992991	1118953	1240431	1271487
रूस का परिसंघ	1118032	872774	1018278	1107305	1262258
नार्वे	868538	831659	957872	926910	949579
वियतनाम	609942	518085	508968	630260	573163
ताइपे, चीनी	467696	459306	522336	564175	529692
कोरिया गणराज्य	556205	496685	536125	534803	492410
इंडोनेशिया	576963	461961	464727	478291	469238
भारत	441376	377574	403162	431252	420175
कनाडा	419542	384787	401412	443673	395330
थाइलैंड	411997	347613	337507	328138	312384
हांगकांग, चीन	56725	62212	130362	14038	194085
अर्जेंटीना	190204	165614	177493	230170	186230
ऑस्ट्रेलिया	195874	160522	179426	150522	164405
माल्टा	68768	121229	121105	130723	153338
मोरक्को	130858	152156	158336	154246	150345
मॉरीशस	105222	122372	111466	134664	136853
आईसलैंड	105789	100604	112372	124775	135495
अन्य	1505483	1327386	1350821	1389415	1427539

तालिका 2. चैप्टर 16 के उपशीर्षक 04 के अंतर्गत मत्स्य और मत्स्य उत्पादों का आयात

(मिलियन अमेरिकन डॉलर में मूल्य)

निर्यातकों के नाम	साल 2014 में आयात का मूल्य	साल 2015 में आयात का मूल्य	साल 2016 में आयात का मूल्य	साल 2017 में आयात का मूल्य	साल 2018 में आयात का मूल्य
विश्व	1458996	1439740	1444284	1541155	1698030
चीन	827075	851693	807669	826287	908778
थाईलैंड	311603	286461	302523	324770	370156
वियतनाम	76810	80223	100754	123413	140253
इंडोनेशिया	84977	73487	77756	99611	105939

फिलीपींस	52783	50212	68458	64690	69098
कोरिया गणराज्य	34885	18784	18097	20636	28041
संयुक्त राज्य अमेरिका	28640	30483	29930	39078	27655
ताइपे, चीनी	3175	15285	4777	4857	8685
इटली	7634	7378	6200	6970	6905
डेनमार्क	1308	1366	1367	1320	3753
भारत	4792	3505	3270	3449	3386
फ्रांस	2592	2306	2666	2532	3082
लेटविया	347	568	1375	2169	2444
मालदीव	2489	2925	1254	2426	2376
स्पेन	2159	1912	2657	2058	2173
कनाडा	4404	3355	4913	4280	2041
जर्मनी	683	384	641	1820	1823
पोलैंड	1217	715	1243	1378	1792
पेरू	1808	947	1467	1373	1661
अन्य	9615	7750	7266	8038	7989

तालिका 3. चैप्टर 16 के उपशीर्षक 05 के अंतर्गत मत्स्य और मत्स्य उत्पादों का आयात

(मिलियन अमेरिकन डॉलर में मूल्य)

निर्यातकों के नाम	साल 2014 में आयात का मूल्य	साल 2015 में आयात का मूल्य	साल 2016 में आयात का मूल्य	साल 2017 में आयात का मूल्य	साल 2018 में आयात का मूल्य
विश्व	1502171	1334995	1353250	1443667	1467902
चीन	613163	518302	544428	590186	590679
थाईलैंड	333688	295257	301728	305454	315999
वियतनाम	291473	255644	257011	291707	307328
इंडोनेशिया	97564	100185	98952	110021	114850
कोरिया	64382	52009	51880	54185	41368
पेरू गणराज्य	9377	10730	15952	12758	15540
भारत	10211	14369	12619	13395	13807
चिली	15249	18800	11773	10098	9508
कनाडा	15865	14355	12534	12122	8817
ग्रीनलैंड	5402	10477	4092	7189	8267
बल्गेरिया	5302	7074	6591	6229	6820
टर्की	4702	2235	3235	2602	4456
फिलीपींस	2102	2076	1842	2636	4220
म्यांमार	4794	4755	2973	3558	4128
लिथुआनिया	3738	2897	2852	3561	3832
संयुक्त राज्य अमेरिका	2037	3502	6729	3919	3713
न्यूजीलैंड	3264	3812	3906	3616	3036
रूसी परिसंघsian	2974	2572	847	1531	2986
ऑस्ट्रेलिया	5916	4489	4443	3931	2803
अन्य	10968	11458	8865	4969	5746

विपणन समाचार

भारतीय समुद्री खाद्य का जापान को आयात

चैप्टर 03 और 1604 के अंतर्गत आपूर्ति के मामले में भारत का स्थान 10वां है जबकि मद 1605 के अंतर्गत मूल्य के हिसाब से भारत का आठवां स्थान है। भारत मुख्यतौर पर जापान को फ्रोजन श्रिम्प्स जिसमें पाले हुए वन्नामेई, ब्लैक टाइगर और समुद्र से पकड़ी गई अन्य प्रजातियां होती हैं। फ्रोजन सुरीमी, मछली के लिए खाना, झींगा, फ्रोजन मछली, स्क्विड्स के विभिन्न उत्पाद, कटलफिश, ऑक्टोप्स, क्लैम और अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों का आयात किया जाता है। साल 2018-19 के दौरान देश ने 81,773 मीट्रिक टन समुद्री खाद्य पदार्थ का जापान को निर्यात किया था जिसका मूल्य 575 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। (तालिका 4)

बाजार की बदलती मांग के अनुरूप भारतीय प्रोसेसर ने मूल्य वर्धित विभिन्न उत्पाद मुहैया करवने शुरू किए। जैसे पकी हुई श्रिम्प, नोबॉशी श्रिम्प, गूंथे हुए उत्पाद, पील्ड डिविन्ड श्रिम्प, पील्ड डिविन्ड टेल ऑन श्रिम्प्स, मैरीनेटिड श्रिम्प, ट्रे पैक सिफलापॉड प्रोडक्ट्स, सीफूड मिक्स और फिश फिलेट।

हालांकि थाईलैंड, इंडोनेशिया, वियतनाम या चीन के मुकाबले भारत में मूल्य वर्धित उत्पादों का प्रतिशत कम है। जापान को आयात माल पहुंचाने वाले कई शिप भारत से लेकर दक्षिण पूर्व एशिया या चीन से कच्चा माल लेते हैं और मूल्य वर्धित उत्पाद में परिवर्तित कर जापान को आयात कर देते हैं। जापान में भविष्य में भी चिल्ड / फ्रेश समुद्री खाद्य पदार्थ का अच्छा बाजार रहेगा।

जापान में ताजे मत्स्य उत्पादों के गुणवत्ता के मानक बहुत ऊंचे हैं जो निर्यातकों को चिल्ड कार्गो या हवाई मार्ग से आपूर्ति करने के लिए बाध्य करते हैं। चेन्नई, कोलकाता, मुंबई और तिरुवनंतपुरम से सीधी जापान के लिए सीधी उड़ान नहीं होने के कारण हवाई मार्ग से मत्स्य उत्पादों की आपूर्ति करने में बाधा आती है।

जापान इंटरनेशनल सीफूड एंड टेक्नॉलजी एक्सपो 2019

जापान इंटरनेशनल सीफूड एंड टेक्नॉलजी एक्सपो अंतरराष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम है। इसमें उद्योग के पेशेवर और विशेषज्ञ एक साथ आकर प्रीमियम सीफूड उत्पादों व तकनीक प्रदर्शित करते हैं। तकनीक के तहत प्रसंस्करण करने वाली मशीनों, एक्वाकल्चर तकनीक, फ्रैशनेस बरकरार रखने की तकनीक और अग्रणी फिशिंग तकनीक प्रदर्शित की जाती है। 21वीं जापान इंटरनेशनल सीफूड एंड टेक्नॉलजी एक्सपो 2019 (जेआईएसटीई) 21 से 23 अगस्त, 2019 तक टोक्यो इंटरनेशनल एक्जीबिशन सेंटर, टोक्यो बिग साइट, जापान में हुई थी। इसे जापान फिशरीज एसोसिएशन ने समर्थन दिया था। इस समारोह में कई देशों ने हिस्सा लिया। इस शो ने सात सुमंदर पार के निर्यातकों को जापानी खरीदारों से सीधे कारोबार करने का अवसर मुहैया करवाया। इस कारोबार के प्रमुख देशों चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, नार्वे और स्कॉटलैंड ने अपने देशों के आकर्षक पवैलियन लगाए थे।

यह प्रदर्शनी सुबह नौ बजे शुरू हुई। इस समारोह की शुरुआत पारंपरिक ढोल बजाने की प्रथा kagami biraki

21वीं जापान इंटरनेशनल सीफूड एंड टेक्नॉलजी एक्सपो के उद्घाटन का नजार।

से हुई। इस अवसर पर टोक्या स्थित भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव (कारोबार) डॉ. सत्यपाल कुमार उपस्थित थे। डॉ. कुमार ने समारोह का दौरा किया और अधिकारियों व भारत के समुद्री खाद्य निर्यातकों से संवाद किया।

भारतीय मंडप

भारतीय मंडप का आयोजन एमपीईडीए ने किया। यह मंडप दक्षिण हॉल 1 के बूथ सीए 38 में 128 वर्ग मीटर क्षेत्र में लगाया गया था। इसमें सात निर्यातक सहप्रदर्शक थे। मंडप में चारों तरफ से प्रवेश कर सकते थे और एमपीईडीए का मंडप तीन तरफ से खुला हुआ था। इसका थीम था - ''दुनियाभर के लोगों के दिलों को जीत रहा है भारतीय समुद्रीखाद्य''। इस थीम ने कई लोगों को आकर्षित किया।

एमपीईडीए के मंडप में मूल्यवर्धित प्रशीतीत उत्पाद जैसे ब्रेडिड व बैटर्ड श्रिम्प्स, बर्गर, आईक्यूएफ पीडी, पीयूडी और स्कीवर श्रिम्प्स, आईक्यूएफ स्क्विड रिंग्स, कटलफिश होल क्लीनड एक्सीलरेटिड फ्रीज ड्राइड श्रिम्प्स, एमएससी सर्टिफाइड ड्राइड क्लैम, हीट एंड सर्व प्रोडक्ट्स, मालाबार श्रिम्प्स बिरयानी, मछली की करी और सुरीमी के उत्पाद प्रदर्शित किए गए।

एमपीईडीए के मंडप में खाना पकाकर दिखाया गया जिससे कई आगंतुक आकर्षित हुए। भारतीय मंडप का आयोजन संयुक्त निदेशक (विपणन) डॉक्टर राम मोहन एम.के. और एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री एम. शक्तिव ने टोक्यो स्थित एमपीईडीए के व्यापार संवर्द्धन कार्यालय के सहायक निदेशक श्री एम. शक्तिवल की मदद से किया। इस अवसर पर ट्रेड इंक्वायरी को इस न्यूजलैटर में अलग से लिखा गया है।

भारतीय मंडप में सह प्रदर्शक

सहप्रदर्शक निर्यातक कारोबारी आर्डर, पूछताछ और एमपीईडीए

विजिटर से बातचीत करते एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री शक्तिवेल ए.।

जापान में भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव (व्यापार) डॉक्टर सत्य पाल कुमार को जानकारी देते एमपीईडीए के संयुक्त निदेशक डॉ. राममोहन एम. के. और एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री शक्तिवेल ए.।

स्टॉल में एक खरीदार से बातचीत करते एमपीईडीए के संयुक्त निदेशक डॉ. राम मोहन एम. के. और एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री शक्तिवेल ए.।

एमपीईडीए के मंडप में एमपीईडीए के संयुक्त निदेशक डॉ. राम मोहन एम. के. से बातचीत करते जापान में भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव (व्यापार) डॉक्टर सत्य पाल कुमार।

के प्रबंधों से अत्यधिक खुश थे। इसके अलावा एक भारतीय निर्यात फर्म ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए और और पांच अन्य प्रतिनिधि के रूप में आए थे।

जेआईएसटीई 2019 में भारतीय मंडप में हिस्सा लेने वालों में मैसर्स एस. ए. एक्सपोर्टस, कोलकाता, मैसर्स उल्का सीफूड्स, मुंबई, मैसर्स फोरस्टार फ्रोजन फूड प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई, मैसर्स सीबे फिशरीज त्रिवेंद्रम, मैसर्स साशमी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड बंगलौर, मैसर्स गदरे मैरीन एक्सपोटर्स प्राइवेट लिमिटेड रत्नागिरी और मैसर्स ब्लूलाइन फूड्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड बैंगलोर ने हिस्सा लिया।

भारत के निर्यातक जापान के आयातकों से मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए निर्यात के लिए सक्रिय रूप से प्रयासरत हैं ताकि वे जापान के लोगों की पसंद के भोजन के अनुसार मूल्यवर्धित उत्पाद मुहैया करवा सकें। इससे जापान के लोगों की श्रिम्प पर निर्भरता कम हो। उत्पाद जैसे सुरीमी के मूल्य वर्धित उत्पाद, प्रशीतीत मछली और मसालेदार मछली के उत्पाद, नरम खोले के केकड़े, सिफ्लापोड्स और क्लेम्स आदि की मांग जापान के बाजार में नियमित रूप से है। भारत में मूल्य वर्धित उत्पाद तैयार करना किफायती है। मूल्य वर्धित उत्पाद तैयार करके हम अपने संसाधनों का बेहतर ढंग से इस्तेमाल करेंगे और हम चिरस्थायीपन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। हम नियमित रूप से इन्हें उपलब्ध करा सकते हैं। इसके अलावा हम प्रसंस्करण की आधारभूत संरचना का बेहतर इस्तेमाल कर सकते हैं और रोजगार को बढ़ावा दे सकते हैं।

एमएससी प्रमाणित शॉर्ट नेक क्लेम का प्रचार प्रसार

भारत स्थित मैरीन स्टीवर्डशिप काउंसिल (एमएससी) ने अष्टमुडी झील में शॉर्ट नेक क्लेम फिशरी (Paphia malabarica) को प्रमाणीकृत किया है। इस काउंसिल ने पहली बार मत्स्य उत्पादों को प्रमाणीकृत किया है। जापान प्रमाणीकृत उत्पादों के लिए अच्छा बाजार है। एमपीईडीए ने जेआइएसटीई 2019 के स्टॉल में एमएससी प्रमाणीकृत एक्सीलरेटिड फ्रीज ड्राइड कॉलम और कॉलम पाउडर को प्रदर्शित किया ताकि एमएससी प्रमाणित उत्पादों का विपणन संवर्द्धन हो। स्टॉल में अष्टमुडी लेक कॉलम का कार्ड बोर्ड भी पेश किया गया।

टोयशो मछली बाजार का दौरा

टोक्यो में नया मछली बाजार टोयशो बनाया गया है। यह विश्व के सबसे बड़े मछली बाजारों में से एक है। यह मार्केट 40 हेक्टेयर में बना हुआ है। यह जापान के पुरे तुसीकीजी मार्केट के आकार का दोगुना है। टोयशो फिश मार्केट में तीन हॉल हैं। इसमें से एक जिंदा मछली, एक प्रशीतीत/ताजा मछली और एक विशेष तौर पर टूना की नीलामी के लिए है। यह तीनों यूनिट में तापमान को नियंत्रित करने के लिए रेफ्ररिजरेशन यूनिट है।

जेआईएसटीई के लिए प्रतिनियुक्त एमपीईडीए अधिकारी संयुक्त निदेशक डॉ. राम मोहन एम. के., सहायक निदेशक श्री शक्तिवेल ए. ने 22 अगस्त, 2019 को टोयशो फिश मार्केट का दौरा किया। उन्होंने टूना की नीलामी का जायजा लिया और टूना की गुणवत्ता और अन्य मछलियों की गुणवत्ता को बरकरार रखने के लिए उनकी देखभाल करने के तरीके को देखा। यह इनके लिए जानकारी मुहैया करवाने वाला दौरा था। इसमें उन्हें मछली के देखभाल के तरीके, टूना की नीलामी और शाशमी ग्रेडिंग के बारे में जानकारी मिली जिससे वे भारत की पीली फिन टूना को जापान की मार्केट में निर्यात करने के बारे में जानकारी मिल सकी।

यहां पर यह ध्यान देने वाली बात है कि जापान में मछुआरों से लेकर प्रसंस्करण केंद्र तक कोल्ड चेन की सुविधा है।

टोयशो फिश मार्केट में नीलानी की प्रक्रिया का नजारा।

टोयशो फिश मार्केट में लाइव कार्गो सेक्शन।

टूना के नीलामी हॉल में एडवांस प्लेटफार्म है जो एयर कर्टेन्स से अलग किए गए हैं। नीलामी हॉल तक जाने के लिए ऑटो ओपनिंग डोर हैं। नीलामी वाले हॉल में साफ सुथरा फर्श है जिसमें तेजी से जल निकासी की सुविधा, कोल्ड स्टोरेज की सुविधा है। इस कोल्ड स्टोर में टूना को शून्य से 20 डिग्री कम और इससे कम तापमान पर भी रखा जा सकता है। नीलामी वाले हॉल में नीलामी प्लेटफार्म आदि की सुविधा भी है। टोयशो फिश मार्केट के नीलामी हॉल में उचित पोशाक और गम बूट्स पहने बिना किसी को भी प्रवेश करने की इजाजत नहीं है।

फुनाबशी फिश लैंडिंग सेंटर का दौराट

एमपीईडीए के अधिकारियों ने टोक्यो स्थित फुनाबशी फिश लैंडिंग सेंटर का 23 अगस्त, 2019 की सुबह दौरा किया। उन्होंने साफ-सुथरे ढंग से मछली के रखरखाव और अन्य लैंडिंग सेंटर के लिए भेजे जाने वाली मछली की पैकेजिंग की सुविधा के बारे में जानकारी प्राप्त की।

यहां पर उल्लेखनीय है कि जापानी मछुआरे और प्रसंस्करकर्ता मछली की गुणवत्ता पर बहुत ध्यान देते हैं। वे आपूर्ति श्रृंखला में मछली की गुणवत्ता पर पूरा ध्यान देते हैं। मछली के छोटे लैंडिंग सेंटर जैसे फुनाबशी में क्रशर सहित आईस मशीन, पैकेजिंग कनवेयर सिस्टम, वजन तोलने की मशीन, डिब्बाबंद बॉक्स को उठाने के लिए हाइड्रोलिक व्हीकल, प्लास्टिक के कंटेनर के लिए बर्फ का घोल बनाना, जेट वॉशिंग मशीन और ठंडे कमरे आदि की सुविधाएं हैं।

जापान के फुनाबशी लैंडिंग सेंटर में मछली पकड़ने की नाव।

जापान के फुनाबशी लैंडिंग सेंटर में बर्फ के घोल में मछली।

लैंडिंग सेंटर में मछली की देखरेख और पैकेजिंग का नजारा।

वर्ल्ड सुश्री कप @ जेआईएसटीई 2019

जापान की मार्केट सुश्री और सशिमी उत्पादों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन उत्पादों की तैयारी गुणवत्ता वाले कच्चे माल से ही संभव है। सुश्री एक्सपो 2019 में अलग अलग देशों की 10 कंपनियों ने हिस्सा लिया। कच्चे माल की गुणवत्ता के कारण भारत की कंपनियां इस एक्सपो में भाग लेने की स्थिति में नहीं थीं।

यह स्पष्ट है कि भारत में मछली के रखरखाव और उनके प्रसंस्करण की पर्याप्त सुविधाओं का अभाव मछली पकड़ने के जहाज और मछली पकड़ने के बंदरगाहों पर हैं। एमपीईडीए मछली पकड़ने के बंदरगाहों और मछली पकड़ने के जहाजों पर आधारभूत सुविधाओं को बेहतर करने के लिए एमपीईडीए प्रयासरत है।

जेआईएसटीई 2019 में प्रदर्शित किए गए सशिमी

सुशी उत्पादों को JISTE 2019 में प्रदर्शित किया गया

तालिका 4. जापान को समुद्री उत्पादों का उत्पाद के हिसाब से निर्यात

Q: मीट्रिक टन में मात्रा, V: करोड़ रुपए में मूल्य, $: मिलियन अमेरिकी डॉलर

उत्पाद		2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
फ्रोजन श्रिम्प	Q:	28719.00	30434.00	34204.00	31284.00	33828.00	36402.00
	V:	1892.29	2116.82	2044.29	2019.74	2126.76	2162.75
	$:	315.06	350.72	316.34	304.95	334.31	313.58
फ्रोजन फिश	Q:	462.00	841.00	335.00	119.00	1589.00	259.00
	V:	10.74	10.11	10.48	3.71	14.50	8.78
	$:	1.82	1.67	1.62	0.56	2.28	1.24
एफआर कटलफिश	Q:	130.00	73.00	148.00	86.00	67.00	21.00
	V:	3.60	1.78	3.90	3.15	2.34	0.98
	$:	0.60	0.30	0.60	0.48	0.37	0.14
एफआर स्क्विड	Q:	1738.00	1225.00	1246.00	1366.00	1710.00	1013.00
	V:	76.38	40.69	47.54	66.30	90.29	58.31
	$:	12.83	6.73	7.30	10.00	14.19	8.50

विपणन समाचार

सूखे उत्पाद	Q:	5855.00	7314.00	1414.00	616.00	2816.00	6056.00
	V:	42.18	65.99	14.52	5.26	23.70	53.48
	$:	7.03	10.75	2.25	0.79	3.73	7.50
जिंदा उत्पाद	Q:	2.00	3.00	2.00	1.00	2.00	1.00
	V:	0.70	0.68	0.77	0.87	0.61	0.81
	$:	0.12	0.11	0.12	0.13	0.10	0.12
प्रशीतीत उत्पाद	Q:	2.00	1.00	1.00	0.00	0.00	3.00
	V:	0.05	0.04	0.06	0.02	0.01	0.10
	$:	0.01	0.01	0.01	0.00	0.00	0.01
अन्य	Q:	34576.00	38882.00	38043.00	35568.00	45639.00	38018.00
	V:	437.89	804.16	489.17	522.32	588.08	1593.73
	$:	73.49	132.00	75.24	77.60	90.30	243.98
कुल	Q:	71484.00	78772.00	75393.00	69039.00	85651.00	81773.00
	V:	2463.83	3040.26	2610.74	2621.37	2846.30	3878.93
	$:	410.95	502.29	403.48	394.50	445.26	575.07

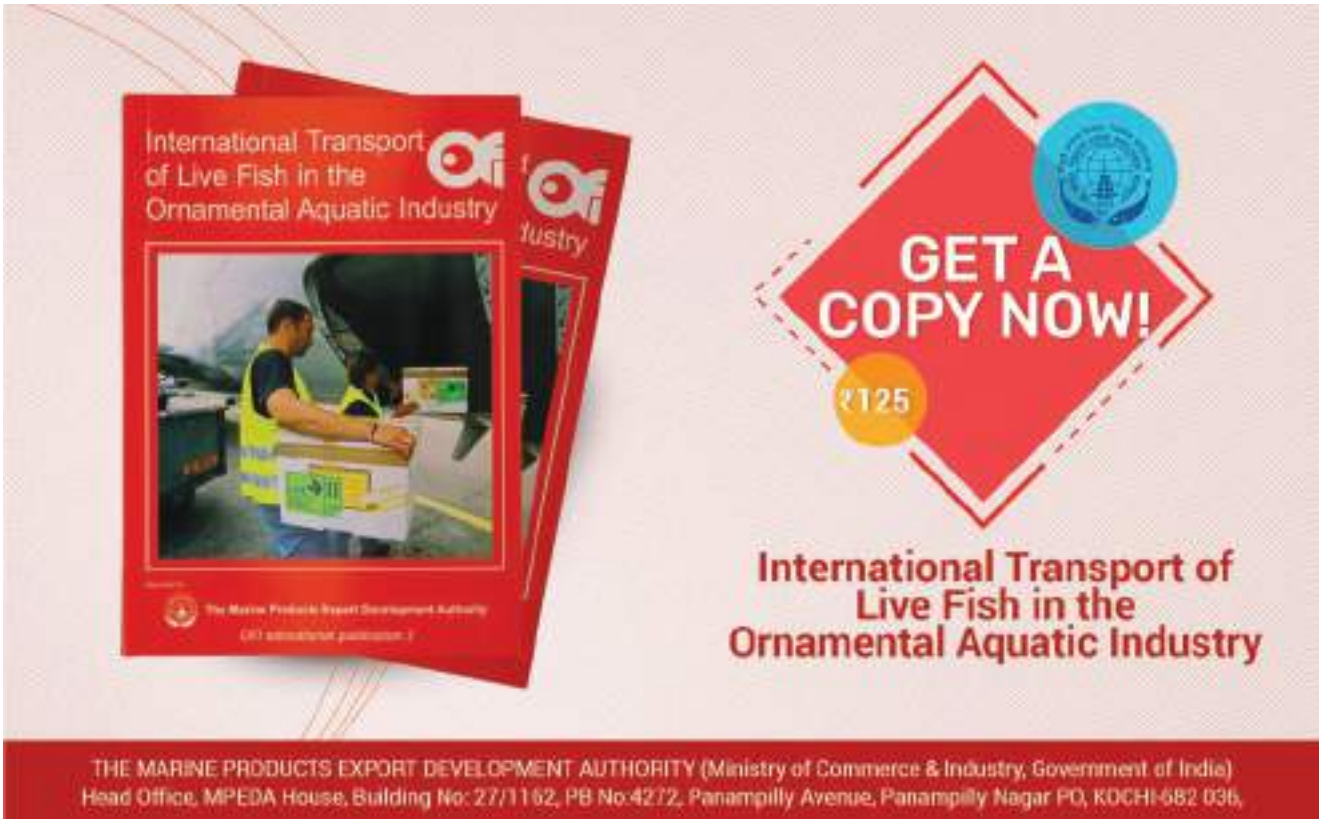

जुलाई, 2019 के दौरान भारत के चुनिंदा बंदरगाहों पर मछली की आवक संबंधी खास बातें

अफजल वी. वी., एन. जे. नीतू, और जॉयस वी. थॉमस
नेटफिश-एमपीईडीए

भारत के प्रमुख बंदरगाहों से रोजमर्रा पहुंचने वाली मछली की प्रमुख प्रजातियों तथा मछली पकड़ने वाले जहाजों के विवरण का लेखा-जोखा नेटफिश रखता है। ऐसा वह मछली पकड़ने के कार्य हेतु एमपीईडीए की प्रमाणन प्रणाली को सुगम बनाने के लिए करता है। प्रस्तुत रिपोर्ट में जुलाई, 2019 के दौरान प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया है।

डेटा संग्रह और विश्लेषण

मछली पकड़ने और नौकाओं के आगमन के आंकड़े भारत के छह तटवर्ती राज्यों के चुनिंदा 62 बंदरगाहों पर तैनात डेटा कलेक्टरों द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्त्रोतों से रोजमर्रा के आधार पर जुटाए गए (देखें तालिका-1)। मछली की प्रमुख प्रजातियों की कुल मात्रा जो बंदरगाह पर एक दिन में उतारी जाती है, उसे अनुमान के आधार पर आंका गया। बंदरगाह पर मछली पकड़ने के जहाजों का नाम, पंजीकरण संख्या और आकार-प्रकार संबंधी जानकारी भी दर्ज की गई। प्रजाति-वार, क्षेत्र-वार, राज्य-वार और बंदरगाह-वार अनुमानों पर पहुंचने के लिए ऑनलाइन ऐप और एमएस ऑफिस (एक्सेल) टूल्स का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया

तालिका 1. डाटा संग्रह के लिए मछली की लैंडिंग स्थलों की सूची आंकड़ा संग्रह

क्रम संख्या	राज्य	बंदरगाह
1	कर्नाटक	गांगोली
2		भटकल
3		मालपे
4		अमडाली
5		कारवार
6		टडरी
7		बेलीकेरी
8	केरल	मुनाबम
9		थोपमपेड़डी
10		कोयलांडी
11		कयाकुलम
12		नीनदाकारा
13		थंगासरी
14		चेलानम
15		पोनान्नेई
16		वाडी
17		वाइपिन
18		चेतुवा
19		विझिहिंजम
20		थोथापल्ली
21		मोपला बे
22		पूथ्थीयप्पा
23		चेरावंथुर
24	तमिलनाडु	कोलाचल
25		चेन्नई
26		नागीपट्टीनम
27		कराइकल
28		पेझियार
29		थेंगीपट्टीनम
30		कड्डलोर
31		पुलीकट
32		पुडुचेरी
33		पोम्पुहर
34		मुदासलोदई

35	तमिलनाडु	तूतीकोरन
36		मंडपम
37		मालीपट्टीनम
38		कोडियाकारी
39		पमबन
40	आंध्र प्रदेश	थरुवइकुलम
41		रामेश्वरम
42		चिनामुट्टम
43		कोटिपट्टनम
44		करीनाडा
45	ओड़ीशा	निजामपट्टनम
46		मछलीपट्टनम
47		विशाखापट्टनम
48		वोदरवू
49		पूडीमडाका
50		यनम
51		पाराद्वीप
52		धमारा
53		बलरामगढ़ी
54		बहाबलपुर
55	पश्चिम बंगाल	बलूगांव
56		देशप्राण
57		शंकरपुर
58		रायदिगी
59		कावद्वीप
60		नामखाना
61		फ्रेजर गंज
62		सोला

मछली की अनुमनित लैंडिंग

जुलाई, 2019 के दौरान 62 लैंडिंग स्थलों से रिकार्ड की गई समुद्री मछली की कुल मात्रा 28,742.78 टन थी। इसमें पैलाजिक फिनफिश 11,957.02 टन (42 फीसद), डेमरसल फिनफिश 7,263.11 टन (25 फीसद) और शेलफिश 9,522.66 टन (33फीसद) थी (आकृति -1)।

पकड़ी गई कुल मछलियों में 223 किस्म की समुद्री मत्स्य सामग्री शामिल थी। इसमें जिन प्रमुख पांच की मात्रा सबसे अधिक थी, वे थे - क्रोएकर (*Johnius spp.*), इंडियन मैकेरल (*Rastrelliger kanagurta*), इंडियन ऑयल सार्डिन (*Sardinella longiceps*), इंडियन एनकर्वो (*Stolephorus indicus*) और पूवलान श्रिम्प (आकृति-2)। कुल पकड़ी गई मछलियों में पकड़ी इन पांच प्रजातियों की मछली की हिस्सेदारी 27 फीसद थी। मछली की पकड़ी गई अन्य प्रजातियों में बोम्बे डक (1,140.05 टन) और कारीकाडी श्रिम्प (1,131.83 टन) थीं। इस महीने के दौरान सबसे कम पकड़ी गई मछली की प्रजाति स्पाइनी लॉबस्टर (*Panulirus ornatus*) थी जो 0.001 टन पकड़ी गई थी।

तालिका 2 में जुलाई 2019 के दौरान पकड़ी गई मछली की प्रजातियों को दर्शाया गया है। इसमें पेलाजिक फिनफिश में एनक्रोविज, इंडियन मैकेरल और टूना का प्रमुख योगदान था। डेमरसल फिनफिश में मुख्यतौर पर क्रोएकर और पोम्फ्रेट्स पकड़ी गई थी। क्रस्टेशियन्स में मुख्य तौर पर पूवालन और कारीकाडी श्रिम्प पकड़ी गई थीं। मोलस्क में कटलफिश और स्क्विड प्रजातियां मुख्य तौर पर पकड़ी गई थीं।

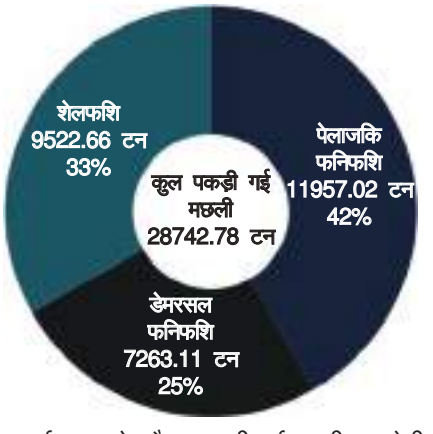

आकृति 1. जुलाई 2019 के दौरान पकड़ी गई मछली का श्रेणी-वर ब्योरा।

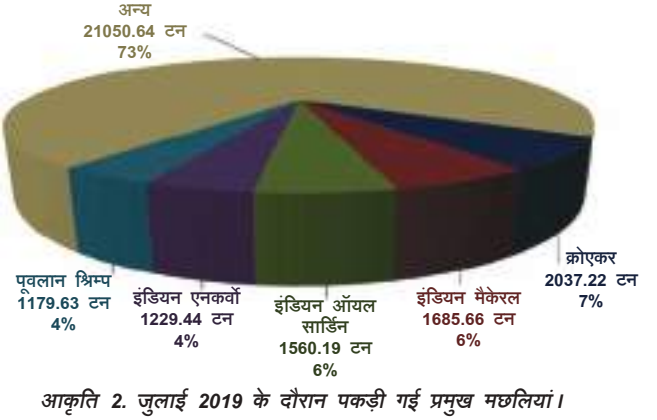

आकृति 2. जुलाई 2019 के दौरान पकड़ी गई प्रमुख मछलियां।

तालिका 2. जुलाई 2019 के दौरान श्रेणी-वर पकड़ी गई मछलियां

मत्स्य उत्पाद	टनों	कुल पकड़ी गई मछलियों का %
पेलाजिक फिनफिश		
एनकोविज	1830.17	6.37

संकेंद्रित क्षेत्र

इंडियन मैकेरल	1752.17	6.10
टूना	1708.69	5.94
इंडियन ऑयल सार्डिन	1560.19	5.43
बोम्बे डक	1140.05	3.97
रिबन फिश	857.85	2.98
शेड्स	716.06	2.49
स्कैड्स	682.85	2.38
सीरफिश	233.03	0.81
मलट	227.96	0.79
इंडियन सैलमन	226.94	0.79
ट्रीवेलीज	194.53	0.68
स्वोर्ड फिश	161.28	0.56
लैसर सार्डिन्स	148.27	0.52
बारबकुडास	129.71	0.45
सिलागो	71.02	0.25
डॉल्फिन फिश	60.48	0.21
सिल्वर बिडीज	38.87	0.14
हॉफबीक्स	37.30	0.13
मार्लिन	28.66	0.10
हेरिंग्स	28.07	0.10
व्हाइट फिश	21.52	0.07
सैल फिश	20.30	0.07
स्पाइनफुट्स	17.54	0.06
ब्लैक किंग फिश (कोबिया)	14.65	0.05
बारामुंडी	13.86	0.05
फ्लाइंग फिश	12.72	0.04
क्वीन फिश	11.32	0.04
वाइट फिश	6.48	0.02
सर्जनफिश	1.95	0.01
नीडलफिश	1.30	0.00
इंडियन थ्रेडफिश	0.65	0.00
मिल्क फिश	0.48	0.00
सीकल फिश	0.05	0.00
वाहू	0.05	0.00
कुल	**11957.02**	**41.60**
डेमरसल फिनफिश		
क्रोकर्स	2202.81	7.66
पोम्फट्र्स	1502.57	5.23
थ्रेड फिन ब्रीम्स	610.46	2.12
कैटफिशेज	604.47	2.10
फ्लैटफिशेज	481.89	1.68
रेज	341.15	1.19
स्नैपर	305.62	1.06
लिजर्ड फिशेज	291.83	1.02
पोनीफिश	276.23	0.96
गोट फिश	153.03	0.53
ट्रिगरफिश	100.32	0.35
मून फिश	92.02	0.32
शार्क	91.21	0.32
कांजर्स	69.86	0.24
रीफ कॉड	39.44	0.14
एम्परर	27.96	0.10
बुल ऑइज	23.65	0.08
पैरट फिश	17.16	0.06
रैबिट फिश	11.33	0.04
पर्च	7.96	0.03
लैदर जैकेट	5.70	0.02
इंडियन थ्रेडफिन	3.24	0.01
फ्लैटहेड	2.23	0.01
सीब्रीम्स	0.70	0.00
ट्राउट	0.30	0.00
कुल	**7263.11**	**25.27**
शेलफिश		
क्रस्टेशियन्स		
कोस्टल श्रिम्प्स	5402.73	18.80
डीप सी श्रिम्प्स	410.49	1.43
झींगा	12.34	0.04
मड क्रैब	18.68	0.06
सी क्रैब	1083.21	3.77
कुल क्रस्टेशियन्स	**6927.45**	**24.10**
मोलस्क		
कटलफिश	1471.15	5.12
ऑक्टोप्स	180.32	0.63
स्क्विड	943.73	3.28
कुल मोलस्क	**2595.20**	**9.03**
कुल शेलफिश	**9522.66**	**33.13**
कुल योग	**28742.78**	**100.00**

पकड़ी गई मछली का राज्य-वर ब्योरा

पकड़ी गई मछली के राज्य-वर ब्योरे के तहत सबसे ज्यादा मछली पश्चिम बंगाल में पकड़ कर लाई गई। पश्चिम बंगाल में 9090.63 टन (पकड़ी गई मछली का 32 फीसद) (आकृति 3)। इसके बाद तमिलनाडु में पकड़ी गई मछली की आवक हुई। तमिलनाडु में 8365.62 टन (29 फीसद) मछली पकड़ कर लाई गई। फिर ओड़ीशा में 4111.84 टन (14 फीसद) मछली पकड़ कर लाई गई।

राज्यों में सबसे कम मछली पकड़ कर कर्नाटक में लाई गई। कर्नाटक में केवल 50.29 टन समुद्री मछली पकड़ कर लाई गई। मछली पकड़ने पर प्रतिबंध लगा होने के कारण गुजरात, महाराष्ट्र और गोवा राज्यों से मछली पकड़ने का कोई ब्योरा नहीं मिला। लिहाजा पूर्वी तट से 88 फीसद मछली पकड़ी गई।

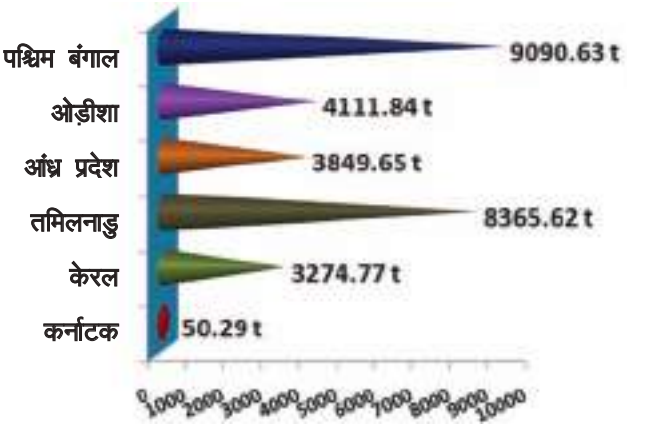

आकृति 3. जुलाई 2019 के दौरान पकड़ी गई मछली का राज्य-वर ब्योरा (टनों में)

पकड़ कर लाई गई मछली का बंदरगाह वर ब्योरा

पश्चिमी और पूर्वी तट के चुनिंदा बंदरगाहों में इस महीन के दौरान पकड़ कर लाई गई मछली के ब्योरे को आकृति 4 और 5 में दर्शाया गया है। इन 62 बंदरगाहों में समुद्र से पकड़ कर सबसे ज्यादा मछली चेन्नई के कासीमेडू बंदरगाह पर लाई गई। कासीमेडू बंदरगाह पर 2171.71 टन (8 फीसद), इसके बाद पश्चिम बंगाल के नामखाना बंदरगाह पर 2142.54 टन (7 फीसद) लाई गई। इस दौरान सबसे पकड़ी गई मछली की सबसे कम आवक केरल के पुथ्थीयप्पा बंदरगाह (0.95 टन) पर हुई। आकृति 4 और 5 में जुलाई

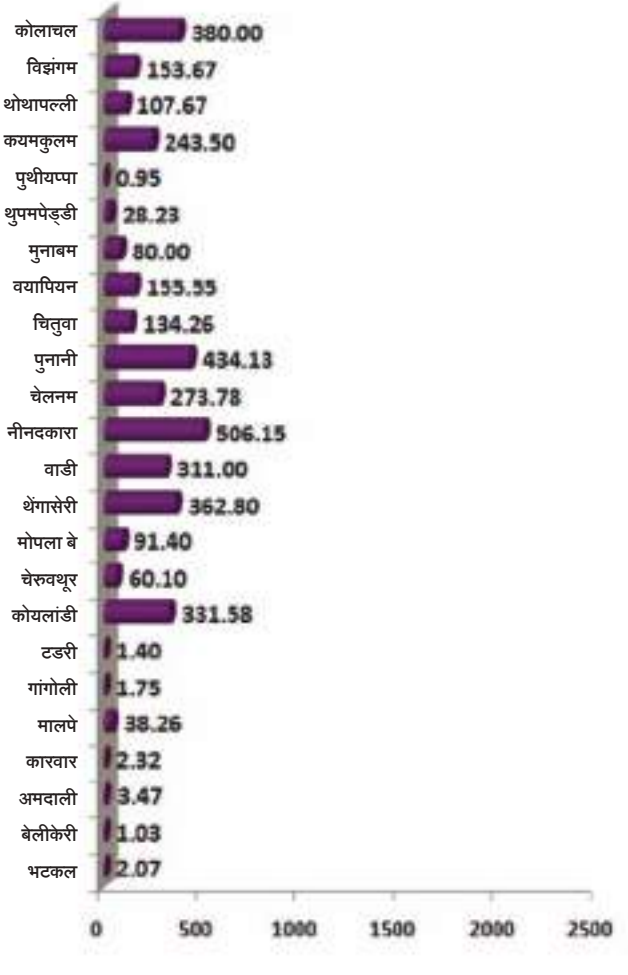

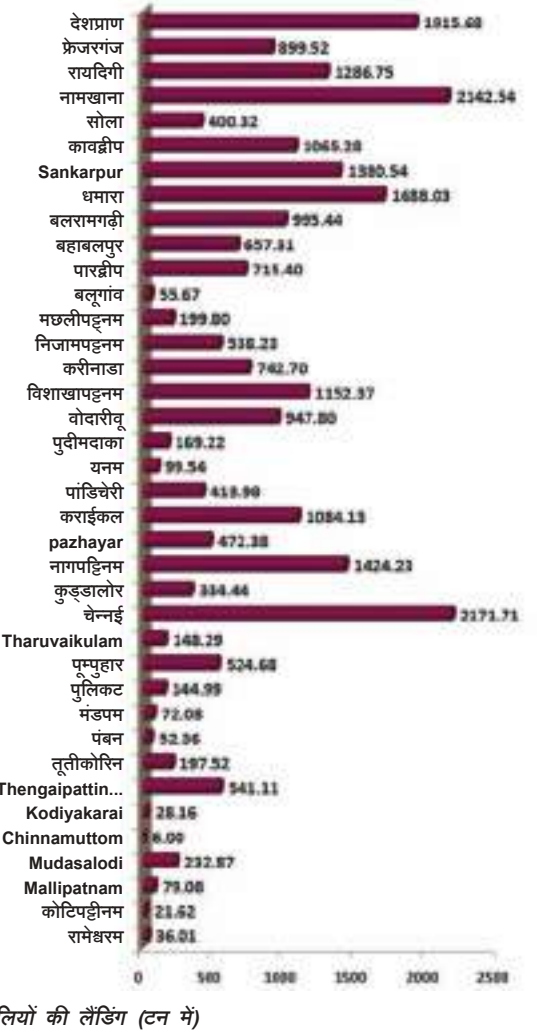

आकृति 4 व 5 में जुलाई, 2019 के दौरान मछलियों की लैंडिंग (टन में)

2019 के दौरान पश्चिमी और पूर्वी तट के बंदरगाहों पर मछली का आवक (टनों में)

नावों के आगमन का अनुमान

जुलाई, 2019 में नौकाओं का कुल आगमन 26858 दर्ज किया गया। नौकाओं का सबसे ज्यादा आगमन विझिंगम बंदरगाह पर (1659) दर्ज हुआ। इसके बाद देशप्राण बंदरगाह नौकाओं का आगमन 1296 बार दर्ज किया गया। इस महीने के दौरान नौकाओं का सबसे कम आगमन चिन्नामुट्टम बंदरगाह (2) पर दर्ज किया गया।

सारांश

भारत के 62 मत्स्य बंदरगाहों पर जुलाई, 2019 में समुद्र से पकड़ी गई कुल 28742.78 टन मछली पकड़ कर लाई गई। इसमें पेलाजिक फिनफिश की भागीदारी सबसे अधिक थी। इस महीने में समुद्र से पकड़ कर लाई गई मछलियों की प्रजातिवर गणना में प्रजाति क्रोकर सबसे अधिक थी। पश्चिमी घाट के राज्य में मछली पकड़ने पर प्रतिबंध लगा होने के कारण इस क्षेत्र से मछली का योगदार कम रहा। लिहाजा जुलाई में समुद्र से पकड़ी गई कुल मछलियों में पूर्वी तट के राज्यों का योगदान 88 फीसद रहा। इस अवधि में पश्चिम बंगाल में सबसे ज्यादा मछली पकड़ कर लाई गई। चेन्नई बंदरगाह पर मछली की सबसे ज्यादा आवक हुई। हालांकि विझिंगम बंदरगाह पर नौकाओं का सबसे ज्यादा आगमन हुआ।

"Rajbhasha Kirti Award" to MPEDA, Kochi

माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह, एमपीईडीए अध्यक्ष श्री. के. एस. श्रीनिवास भा.प्र.से. को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

The Hon'ble Union Minister of Home Affairs, Mr. Amit Shah presenting Rajbhasha Kirti Award to Mr. K. S. Srinivas IAS, Chairman, MPEDA

एमपीईडीए, कोच्चीप को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

वर्ष 2018-19 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के सर्वोत्तकम कार्यान्वपयन के लिए केन्द्रन सरकार के बोर्ड / स्वाचयत्ता निकाय की श्रेणी में 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कातर' (प्रथम) समुद्री उत्पा्द निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) को प्राप्तय हुआ। यह पुरस्काररर माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह द्वारा श्री के.एस.श्रीनिवास, भा.प्र.से, अध्यृक्ष, एमपीईडीए को दिनांक 14.09.2019 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में दिया गया।

पिछले वर्ष भी एमपीईडीए को प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कुार (प्रथम) प्राप्तर हुआ था। जो एक राष्ट्री य स्तएर की मान्यजता है और जिसे गृह मंत्रालय द्वारा उन बोर्ड/ स्वायत्तत निकायों के दिया जाता है जिनका राजभाषा कार्यान्वपयन सर्वोत्तम होता है।

The Marine Products Export Development Authority (MPEDA) has won the "Rajbhasha Kirti Award" (First) in the Board/Autonomous body category of Central Government Organisations for excellent implementation of Official Language Policy of the Union during 2018-'19.

The Award was presented by Mr. Amit Shah, Union Minister for Home Affairs, to Mr. K. S. Srinivas IAS, Chairman, MPEDA, at the official function held at Vigyan Bhavan, New Delhi on September 14, 2019.

MPEDA had bagged the prestigious "Rajbhasha Kirti Award" (First Prize) last year too, which is a national level recognition given by the Ministry of Home Affairs to those Board/Autonomous Bodies whose execution of implementation of official language of the union is the best.

स्कूली छात्रों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

होन्नावर के जनता विद्यालय में जागरूकता से संबंधित वीडियो देखते छात्र

नेटफिश ने वेरावल के सरकारी स्कूल, पोरबंदर के सरकारी स्कूल, होन्नावर के जनता विद्यालय और मंगरौल के परमेश स्कूल में क्रमश 8, 16, 20 और 23 जुलाई, 2019 को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। कर्नाटक के होन्नावर में आयोजित कार्यक्रम में तकरीबन 140 छात्रों के अलावा शिक्षकों ने हिस्सा लिया। गुजरात में आयोजित कार्यक्रम में तकरीबन 150 छात्रों ने सक्रिय रूप से कार्यक्रम में शिरकत की।

स्वच्छता और साफ-सफाई, मछली की गुणवत्ता के प्रबंधन, समुद्री पर्यावरण के संरक्षण, चिरस्थायी रूप से मछली पकड़ने के लिए कदम उठाने, मछली पकड़ने पर प्रतिबंध की अवधि, स्क्वैश मेश कोड एंड के इस्तेमाल, अविकसित अवस्था की मछलियों को पकड़ने, कूड़ा निस्तारण के हानिकारक प्रभावों आदि पर राज्य समन्वयक और एनजीओ के प्रतिनिधि ने कक्षाएं आयोजित कर जानकारी दी। छात्रों और शिक्षकों को मछली की संरक्षण और उसकी गुणवत्ता बरकरार रखने के बारे में जानकारी देने वाले पोस्टर और लीफलेट्स वितरिण किए गए। छात्रों को मछली के संरक्षण पर एनिमेटिड वीडियो दिखाय गया।

Subscription Order / Renewal Form

Please enroll me / us as a subscriber / renew my existing subscription of the MPEDA Newsletter. The subscription fee of Rs. 1000/- inclusive of GST for one year is enclosed vide local cheque/DD No.....
dt..... drawn in favour of The Secretary, MPEDA', payable at Kochi.
Please send the journal to the following address:

.....

.....

Tel No..... Fax : .....
Email.....

For details, contact:
The Editor, MPEDA Newsletter, MPEDA House, Panampilly Nagar, Kochi - 682 036, Tel: 2311979, 2321722
Fax: 91-484-2312812, Email : newslet@mpeda.gov.in

समुद्री सुरक्षा और नौपरिवहन पर मछुआरों को प्रशिक्षण

गांगोली में समुद्री सुरक्षा के कार्यक्रम का उद्घाटन करते गांगोली के मछुआरों की यूनियन के अध्यक्ष श्री मंजू भिलावा।

नेटफिश ने जुलाई 2019 में समुद्री सुरक्षा और मछली पकड़ने के सुरक्षित तरीकों के बारे में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। इसमें मछुआरों, मछली पकड़ने की नौका के सदस्यों और नौका मालिकों को जागरूक किया गया।

गांगोली मत्स्य बंदरगाह में एनजीओ केयर्स के सहयोग से समुद्री सुरक्षा और नौपरिवहन पर 3 जुलाई, 2019 को कार्यक्रम आयोजित किए गए। गांगोली में मछुआरों की यूनियन के अध्यक्ष श्री मंजू भिलावा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किआ। उन्होंने मछुआरों से अनुरोध किया कि वे समुद्र के कानून और सुरक्षा प्रबंधन का पालन किया करें। गांगोली मत्स्य बंदरगाह की सहायक मत्स्य निदेशक श्रीमती अंजनादेवी ने मछली पकड़ने जाने के लिए आवश्यक दस्तावेज के बारे में बताया। मछली पकड़ने के दौरान इन दस्तावेज को आवश्यक रूप से ले जाना चाहिए। गांगोली के तटीय सुरक्षा पुलिस के सहायक उपनिरीक्षक श्री अगस्टीन ने प्रतिभागियों को समुद्री सुरक्षा और नौपरिवहन के बारे में जानकारी दी। नेटफिश के एससीओ श्री नारायणा के. ए. ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में बताय। गांगोली में तटीय सुरक्षा पुलिस के हेड कांस्टेबल श्री सुरेंद्र ने लाइफ जैकेट और लाइफ बॉयज के इस्तेमाल के तरीके के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में तकरीबन 45 मछुआरों ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। प्रशिक्षण लेने वालों ने नेटफिश से अनुरोध किया कि जीवन सुरक्षा के उपकरणों के बारे में जानकारी देने के लिए इस क्षेत्र में और कार्यक्रम आयोजित करे। केयर्स के श्री सथीश मेबन ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम वेरावल के 12 जुलाई, 2019 को आयोजित किया गया। इसमें प्रतिभागियों को व्यक्तिगत सुरक्षा के महत्व के बारे में जानकारी दी गई और उन्हें प्रदर्शित कर बताया गया कि आपात स्थिति में इन सुरक्षा उपकरणों का किस तरह इस्तेमाल किया जाए। जूनागढ़ एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के सहायक प्रोफेसर श्री केतनभाई वी. टैंक इस कार्यक्रम के रिसोर्स पर्सन थे। इस कार्यक्रम में 30 मछुआरों ने हिस्सा लिया। मछुआरों की जीवनरक्षक उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसलिए डेशन माइल एससी और केयलाघाट के नौका मालिकों ने कुछ लाइफ बॉयज का वितरण भी किया।

दक्षिण 24 परगना के 10 जुलाई, 2019 को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान राज्य के समन्वयक श्री अतनु रॉय ने विषण परिस्थितियों में जीवनरक्षक उपकरणों जैसे लाइफ जैकेट और लाइफ बॉयज के उपयोग करने के तरीके बारे में चर्चा की और इनका इस्तेमाल भी करके दिखाया। नेटफिश ने नौका मालिकों और मछुआरों को इस बात के लिए आश्वस्त किया कि वे मछली पकड़ने की नौकाओं में पर्याप्त संख्या में जीवन सुरक्षा उपकरण रखा करें।

डेश माइल पर लाइफ बॉयज के वितरण का नजार।

बंदरगाहों की स्वच्छता पर साझेदारों की बैठक

फिश मर्चेंट एसोसिएशन से मुलाकात करते नेटफिश राज्य समन्वयक।

थोमपड्डी में जुलाई के दौरान कोच्चि मत्स्य बंदरगाह पर स्वच्छता और बेहतर प्रबंधन पर चर्चा के लिए साझेदारों की बैठक आयोजित की गई।

बंदरगाह पर 8 जुलाई, 2019 को पहली बैठक आयोजित हुई। इसकी अध्यक्षता नेटफिश के सीई डॉ. जॉयस वी. थामस ने की। डॉ. जॉयस ने प्रतिभागियों को विदेशी बंदरगाहों पर स्वच्छता से मछली के रखरखाव का वीडियो साझा किया। उन्होंने प्रतिभागियों को साफ सुथरे ढंग से मछली का रखरखाव करने के बारे में बताया। उन्होंने बंदरगाह पर वेसल लॉग सिस्टम लागू करने के बारे में भी बताया। नेटफिश की राज्य समन्वयक श्रीमती संगीथा एन. आर., कोच्चि बंदरगाह श्रमिक यूनियन के सचिव श्री बी. हमजा, बंदरगाह समन्वयक समिति के महासचिव श्री. एम. माजिद और गिलनेट बाइंग एजेंट्स एसोसिएशन के सदस्य श्री राशिद ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। बंदरगाह के विभिन्न क्षेत्रों के 25 सदस्यों ने इस बैठक में हिस्सा लिया। इन सदस्यों ने मछली व बर्फ के रखरखाव, मछली काटने, बर्फ तोड़ने, श्रमिकों की वर्दी, वाहनों की पार्किंग आदि में सुधार लाने के लिए चर्चा की। इसमें यह फैसला किया गया कि हर साझेदारों के समूह से अलग बैठक आयोजित की जाएगी।

अगली बैठक फिश मर्चेंट एसोसिएशन के साथ 18 जुलाई, 2019 को बंदरगाह पर आयोजित की गई। इस बैठक में 35 सदस्यों ने हिस्सा लिया। फिश मर्चेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री सलीम और फिश मर्चेंट एसोसिएशन के सचिव श्री उमर बैठक में उपस्थित थे। वे इस पर सहमत हुए कि बंदरगाह पर मछली और बर्फ के रखरखाव के तरीकों को बेहतर किया जाए। वे इस पर भी सहमत हुए कि मछली काटने के बाद प्लेटफार्म को साफ किया जाए और मछली काटने की जगह व मछली के रखारखाव के क्षेत्र को अलग-अलग किया जाए। कार्ययोजना को अंतिम रूप देने से पहले अन्य साझेदारों के साथ भी बैठक आयोजित की जाएगी।

वर्ल्ड ट्रेड डे महाराष्ट्र में एमपीईडीए

बैठक को संबोधित करते मुंबई के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के संयुक्त निदेशक श्री अनिल वेलडे। इस अवसर पर उपस्थित थे - लॉयन क्लब के सचिव श्री रवि लिमाये, ईआरएनएसटी एंड यंग की सीनियर कंसल्टेंट सुश्री कीर्ति अग्रवाल, एमपीईडीए के उपनिदेशक डॉ. टी. आर. जिबीनकुमार, जेएसडब्लू जयगढ़ पोर्ट के कैप्टन रवि चंद्र, रत्नागिरी लॉयन क्लब के अध्यक्ष श्री दीपक सालवी, रत्नागिरी जिला उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक श्री. एस. आर. कोल्टे और डब्लूटीसी मुंबई ट्रेड इंस्टीच्यूट के सीनियर फैकल्टी श्री एकनाथ बिरारी।

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (डब्लूटीसी) मुंबई का गठन 26 जून, 1970 को हुआ था। इसका पंजीकरण भारतीय कंपनी इंडियन कंपनी अधिनियम के सेक्शन 25 के तहत गैरलाभकारी कंपनी का गठन किया गया। इस कंपनी का नाम मोक्षगुंदम विश्वसरैया इंडस्ट्रीयल रिसर्च एंड डवलपमेंट सेंटर (एमवीआईआरडीसी) रखा गया। इसका ध्येय शोध व विकास और भारत व विदेश में डब्लूटीसी की स्थापना के उद्देश्यों को पूरा करना है। एमवीआईआरडीसी की प्रबंधन काउंसिल में महाराष्ट्र सरकार, भारत सरकार और निजी क्षेत्र के प्रतिनिधि हैं जिसे विश्वसरैया सेंटर के नाम से जाना जाता है। बहुमंजिला वाणिज्य सेंटर में विश्वसरैया सेंटर कांप्लेक्स व टॉवर है। टॉवर के आसपास सुंदर लैंडस्कैप है जो वर्ल्ड ट्रेड सेंटरों की एक सामान्य विशेषता है जिसमें एक ऊंची इमारत जो अलग से दिखती है और यह अंतरराष्ट्रीय समझ और समन्वय का प्रतीक है।

इस वाणिज्य केंद्र में औद्योगिक अनुसंधान, पुस्तकालय, व्यापार सूचना सेवा का सूचना केंद्र, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय उद्योग व व्यापार के कार्यालयों से संपर्क, राज्य व क्षेत्रीय एजंसियों से संपर्क, कस्टम कार्यालय व कस्मट हाउस के ब्रोकरों से संपर्क, स्टीमर, रेल, ट्रक व हवाई मार्ग के यातायात के साधनों, वित्तीय व इंश्योरेंस सेवाओं, कारोबार सेवा संगठनों के कार्यालयस ट्रेड सर्विस, कान्फ्रेंस व कैफेटेरिया के साथ साथ संगोष्ठी कक्ष हैं।

दुनियाभर के वर्ल्ड ट्रेड सेंटरों की अद्भुत पहल वर्ल्ड ट्रेड दिवस है। इसका ध्येय अंतरराष्ट्रीय कारोबार के बारे में जागरूकता बढ़ाना और इसके आर्थिक व क्षेत्रीय विकास के प्रभावों के बारे में आकलन करना है। केंद्र सरकार और महाराष्ट्र सरकार आने वाले सालों में भारत का निर्यात बढ़ाने के लिए कई कदम उठा रही है। ऐसे में इस कार्यक्रम का महत्व बढ़ जाता है।

इस कार्यक्रम का ध्येय राज्य भर के खेती, वाहन, इंजीनियरिंग और टेक्सटाइल क्षेत्र के लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्योग में कौशल विकास के कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाना है ताकि वे वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकें। वर्ल्ड ट्रेड डे नए उद्यमियों, महिला उद्यमियों, लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्योगों के साथ - साथ निर्यातकों/औद्योगिक घरानों को अंतरराष्ट्रीय कारोबार, नए अवसरों और अंतरराष्ट्रीय कारोबार की चुनौतियों से निपटने की वैश्विक स्तर की विशेषज्ञता हासिल करने का अवसर मुहैया करवाता है। इसका ध्येय युवा व लघु उद्यमियों को अपना कारोबार स्थापित करने या उसे बेहतर करने का अवसर मुहैया करवाना है।

एमवीआईआरडीसी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर ने वर्ल्ड ट्रेड डे के तहत रत्नागिरी में 18 जुलाई, 2019 को प्रशिक्षण सत्र 'वैश्विक अवसरों के लिए लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्योगों का कौशल विकास' कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें समुद्री व कृषि उत्पादों की निर्यात की संभावनाओं पर प्रमुख रूप से जोर दिया गया।

इस सत्र का आयोजन महाराष्ट्र सरकार के मुंबई उद्योग, व्यापार व निवेश सुविधा केंद्र की सहभागिता से किया गया

था। इस कार्यक्रम में लॉयन्स क्लब-रत्नागिरी, महाराष्ट्र राज्य कृषि विपणन बोर्ड (एमएसएएमबी) और मत्स्य उत्पाद निर्यात विकास संवर्द्धन प्राधिकरण (एमपीईडीए) ने भी योगदान दिया।

इस अवसर पर रत्नागिरी जिला औद्योगिक केंद्र के महाप्रबंधक श्री एस. आर. कोल्टे ने राज्य से समुद्री व कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए केंद्र सरकार और महाराष्ट्र सरकार की पहल के बारे में जानकारी दी। उन्होंने युवाओं को मछली पकड़ने के प्रशिक्षण, मछली बीज केंद्र स्थापित करने, मछली लैंडिंग सेंटर पर आधारभूत संरचना मुहैया करवाने, मत्स्य से जुड़ी सहकारी सोसायटी, फिश फार्मर डवलपमेंट एजंसी स्थापित करने आदि की योजनाओं के बारे में जानकारी दी। श्री कोलटे ने इस अवसर पर पर उपस्थित लोगों को बताया कि साल 2018-19 में महाराष्ट्र ने तकरीबन 5043 करोड़ रुपए के मत्स्य उत्पादों का निर्यात किया जबकि इससे पहले के वित्तीय साल 2016-17 में 4312 करोड़ रुपए के मत्स्य उत्पादों का निर्यात किया था।

इस सत्र को एमपीईडीए के उपनिदेशक डॉ. टी. आर. गिबिनकुमार ने भी संबोधित किया। उन्होंने संक्षिप्त में एमपीईडीए की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी जिसमें खासतौर से रत्नागिरी में आयोजित गतिविधियों के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने ट्रेड ईकोसिस्टम को विकसित करने की जरूरत पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने प्राथमिक उत्पाद तैयार करने वालों से लेकर ग्राहकों तक उत्पाद के प्रमाणीकरण व मूल्य संवर्द्धन पर जोर दिया। डॉ. गिबिनकुमार ने रत्नागिरी की संभावनाओं व यहां के उत्पादों को और बढ़ाने व निर्यात को बढ़ाने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप की जरूरत पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में रत्नागिरी उपक्षेत्रीय डिवीजन के सहायक निदेशक श्री शाजी जार्ज और कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. विष्णुदास गुनागा ने भी शिरकत की।

इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य कृषि विपणन बोर्ड (एमएसएएमबी) के महाप्रबंधक श्री मिलिंद जोशी ने रत्नागिरी के कृषि उत्पादों में खासकर प्रसंस्करित फल, पेय पदार्थों और रेशे से बने उत्पादों की निर्यात संभावनाएं बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि किसानों को मूल्यवर्धित उत्पादों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए और भारत सरकार व महाराष्ट्र सरकार की प्रसंस्करण इकाइयों से जुड़ी विभिन्न योजनाओं का फायदा उठाना चाहिए। इस कार्यक्रम के दौरान डब्लूटीसी मुंबई ट्रेड इंस्टीच्यूट के सीनियर फैकल्टी श्री एकनाथ बिरारी ने परस्पर संवाद सत्र के दौरान निर्यात की विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में प्रकाश डाला। श्री बिरारी ने विदेशी व्यापर की विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में शुरुआत से जानकारी दी। इसके तहत आयात निर्यात कोड (आईईसी) हासिल करना, प्री शिपमेटं व पोस्ट शिपमेंट फाइनेंस तक एक्सेस और भारत सरकार की निर्यात संवर्द्धन की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी। श्री बिरारी ने इंकोटर्मस (शॉर्ट ऑफ इंटरनेशनल कमर्शियल टर्म) के बारे में जानकारी दी जो वैश्विक स्तर पर आयात व निर्यात के बारे में स्वीकृत मानक है। श्री बिरारी ने अपने भाषण का समापन में गुणवत्ता के मानकों के महत्व, पैकेजिंग और लेबलिंग के मानदंडों, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सामान व सेवाओं में शुल्क व गैरशुल्कों के अवरोधों के बारे में जानकारी दी।

इससे पहले एमवीआईआरडीसी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर मुंबई के संयुक्त निदेशक श्री अनिल वालदे ने इस सेंटर और महाराष्ट्र से निर्यात बढ़ाने में इसके योगदान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह केंद्र सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग को वैश्विक बाजार में सुविधा मुहैया करवाने को प्रथामिकता देता है। उन्होंने सुझाव दिया कि वर्ल्ड ट्रेड सेंटर मुंबई की विभिन्न व्यापार संवर्द्धन व कारोबार शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों में रत्नागिरी को हिस्सा लेना चाहिए।

परस्पर संवाद सत्र श्रोताओं और नामचीन वक्ताओं में कई प्रश्न-उत्तर के दौर हुए। इस समारोह में लॉयन क्लब रत्नागिरी, जेएसडब्लू जयगढ़ पोर्ट और ग्लोबल प्रोफेशनल सर्विसेज फर्म ईआरएनएसटी एंड यंग के विशेषज्ञों ने भी संबोधित किया।

क्लैम मछली पकड़ने वाले और निर्यातकों की बैठक

कार्यक्रम का नजार।

एमपीईडीए के कोल्लम उपक्षेत्रीय डिवीजन ने क्लैम मछली पकड़ने वालों और निर्यातकों की बैठक कोल्लम स्थित ठेक्कुम्बागम पंचायत कम्यूनिटी हॉल में 4 सितंबर, 2019 को आयोजित की।

कोल्लम उपक्षेत्रीय डिवीजन की कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्रीमती प्रीता प्रदीप ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। ठेक्कुम्बागम पंचायक के प्रमुख श्री अनिल कुमार ने बैठक का स्वागत किया। उद्घाटन भाषण के बाद सीएमएफआरआई के पूर्व वैज्ञानिक श्री अप्पूकुट्टन ने और मत्स्य विभाग की सहायक निदेशक श्रीमती अनीथा ने अपने विचार रखे। श्री अप्पूकुट्टन ने ठेक्कुम्बागम क्षेत्र में क्लैम मछली पकड़ने वालों की समस्याओं को उजागर किया। उन्होंने जोर दिया कि मछुआरों को क्लैम फिश का अच्छा दाम प्राप्त करने के लिए इसका रखरखाव स्वच्छता के साथ करना चाहिए। उन्होंने चिरस्थायी मत्स्य और एमएससी प्रमाणीकरण पर जोर दिया।

बैठक में क्लैम मछली पकड़ने वाले कई मछुआरों ने यह मुद्दा उठाया कि समुद्री खाद्य निर्यातक पीले क्लैम की कम मांग कर रहे हैं। उन्होंने शिकायत की कि वे निर्यात किए जाने वाले क्लैम का अच्छा दाम नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं।

क्लैम मछली पकड़ने वाले एक मछुआरे श्री अलेक्जेंडर ने कहा कि क्लैम मछली पकड़ने वाले मछुआरे क्लैम के एक किलो मांस के लिए 100 रुपए ही प्राप्त कर पा रहे हैं जो इस कार्य में लगे श्रम से तालमेल नहीं खाता है। उन्होंने कहा कि एक किलो क्लैम के मांस के लिए न्यूनतम 200 रुपए मिलने चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को इसका न्यूनमत मूल्य घोषित करने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि क्लैम को अन्य राज्यों को बेचा जाना बंद किया जाना चाहिए।

क्लैम मछली पकड़ने वाले एक अन्य मछुआरे जॉय ने कहा कि निर्यात किए जाने वाले मांस की नीलामी की प्रक्रिया पारदर्शी नहीं है और इस क्षेत्र में दलालों के हस्तक्षेप को रोका जाना चाहिए। इस अवसर पर निर्यातकों के प्रतिनिधियों ने भी अपना पक्ष रखा। उन्होंने मांग की कि ठेक्कुम्बागम पंचायत में क्लैम लैंडिगं सेंटरों में डेपूरेशन सेंटर खोले जाएं। इसमैरियो एक्सपोर्ट एंटरप्राइजेज के महाप्रबंधक श्री कुरुप ने उजागर किया कि जब मौसम शुरू होता है तो एजेंट तयशुदा कच्चे माल की आपूर्ति नहीं कर पाते हैं। उन्होंने कहा कि क्लैम के मांस की प्राप्ति को लेकर अनिश्चितता रहती है और खराब गुणवत्ता (मिट्टी के तेल के कणों की उपस्थित, पके हुए मांस में टूटे हुए खोल, पैथोजनिक बैक्टीरिया की अत्यधिक मात्रा आदि) के कारण निर्यात करने वाली फर्म का माल रद्द हो जाता है।

अमलागम एंटरप्राइजेज के श्री जार्ज ने कहा कि क्लैम

पकड़ने वाले मछुआरों को निर्यातक अच्छा दाम मुहैया करवा सकते हैं, अगर वे अच्छी गुणवत्ता का मांस उपलब्ध करवाएं। गुणवत्ता में सुधार किए बिना मांस का निर्यात नहीं किया जा सकता है।

सीबॉय फिशरीज प्राइवेट लिमिटेड के श्री जॉनी ने कहा कि मछुआरे अपने घर में मीठे पानी में क्लैम को रखते हैं जिसके मानदंड समुचित नहीं होते हैं। मछुआरे घर में क्लैम के खोल निकालने की प्रक्रिया में साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखते हैं। इसके चलते निर्यात किए जाने वाले सामान की गुणवत्ता से कई बार समझौता करना पड़ता है। यह भी बताया गया कि क्लैम पकड़ने वाले मछुआरों को निर्यात के लिए अच्छी गुणवत्ता देनी चाहिए या मानदंडों के अनुकूल साझा डेपूरेशन सेंटर बनाए जाने चाहिए तभी क्लैम के पूरे मांस का निर्यात किया जा सकेगा।

पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण

एसआरके एक्सपोर्टस प्राइवेट लिमिटेड में पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण लेते प्रतिभागी।

एमपीईडीए के रत्नागिरी उपक्षेत्रीय डिवीजन ने प्रसंस्करण उद्योग से जुड़े श्रमिकों के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के तहत दो प्रशिक्षण कार्यक्रम अगस्त और सितंबर, 2019 में आयोजित किए। पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम व इस शृंखला में पांचवां कार्यक्रम रत्नागिरी के मिरजोल स्थित मैसर्स टीजे मैरीन एक्सपोर्टस प्राइवेट लिमिटेड में 21 से 23 अगस्त, 2019 तक कार्यक्रम आयोजित किया गया। दूसरा प्रशिक्षण कार्यक्रम व इस शृंखला में छठा प्रशिक्षण कार्यक्रम रत्नागिरी के मीरक्वाड़ स्थित मैसर्स एसआरके एक्सपोर्टस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में 18 से 20 सितंबर, 2019 तक आयोजित हुआ। इन कार्यक्रमों के लिए अगस्त 2019 में प्री स्क्रीनिंग आयोजित की गई थी और प्रसंस्करण इकाइयों के 80 श्रमिकों का चयन किया गया था। इनका विवरण एनसीडीसी की वेबसाइट पर दर्ज किया गया था। इसके बाद 32 से 39 श्रमिकों के बैच बनाए गए थे।

एसआरके एक्सपोर्टस प्राइवेट लिमिटेड में किट्स वितरण।

रत्नागिरी के मिरजोल स्थित मैसर्स टीजे मैरीन एक्सपोर्टस प्राइवेट लिमिटेड में 21 अगस्त, 2019 को कार्यक्रम क

There's no seafood as
Irresistible
as Indian Seafood
From the sparkling Indian seas comes the finest seafood in the world. Enjoy it in abundance throughout the year.
You haven't tasted the best seafood, if you haven't tasted Indian seafood.
The Marine Products Export Development Authority
(Ministry of Commerce & Industry, Government of India)
MPEDA House, Panampilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India
Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: ho@mpeda.gov.in

टीजे मैरीन एक्सपोर्टस प्राइवेट लिमिटेड में प्रतिभागी के किट् देते एमपीईडीए के उपनिदेशक डॉ. टीबी गिबिनकुमार।

का औपचारिक उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर उपनिदेशक डॉ. टी.आर. गिबिनकुमार, रत्नागिरी उपक्षेत्रीय डिवीजन के सहायक निदेशख श्री शाजी जार्ज और टीजे मैरीन एक्सपोर्टस प्राइवेट लिमिटेड के अधिकारी उपस्थित थे।

उद्घाटन और परिचय कार्यक्रम के बाद प्रशिक्षणार्थियों को किट्स वितरित की गईं। डा. जिबीनकुमार ने एमपीईडीए की गतिविधियों की जानकारी देते हुए सत्र की शुरुआत की। श्री शाजी जार्ज ने पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और इसके विभिन्न चरणों के बारे में जानकारी दी। इसके बाद के सत्रों में समुद्री खाद्य पदार्थों की खराब होने की प्रकृति, संरक्षण के तरीकों, साफ सफाई से मछली के देखभाल के तरीके, गुड मैन्यूफैक्चरिंग प्रैक्टिस, सैनिटेशन स्टैंडर्ड आपरेटिंग प्रोसीजरन, एचएसीसीपी, ग्रेडिंग, मछली को संरक्षित करने के तरीके, समुद्री खाद्य पदार्थों में जोखिम, मूल्य वर्द्धन और खाद्य सुरक्षा में विभिन्न एजंसियों की भूमिका आदि की जानकारी दी गई। ये सत्र 20 और 21 अगस्त, 2019 के दौरान आयोजित किए गए। सभी सत्रों के दौरान तकनीकी प्रस्तुतीकरण, लीफलेट्स और वीडियो का इस्तेमाल किया गया। बाहर से आए मूल्यांकनकर्ता ने 23 अगस्त, 2019 को वस्तुनिष्ठ लिखित परीक्षा, व्यावहारिक दक्षता सत्र और प्रश्नोत्तर कर प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया। प्रशिक्षण के लिए पंजीकृत हुए 32 अभ्यार्थियों में से 29 अभ्यार्थियों ने प्रशिक्षण लिया।

मिरकरवाड़ा स्थित मैसर्स एसआरके एक्सपोर्टस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में 18 सितंबर, 201 को कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। डॉ. जिबीनकुमार ने सत्र का उद्घाटन करते हुए पीएमकेवीवाई कार्यक्रम के बारे में चर्चा की। कार्यक्रम का परिचय दिए जाने के बाद प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण किट्स दी गईं। डॉ. जिबीनकुमार ने दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के सत्रों के दौरान कई विषयों का संचालन किया। कंपनी के तकनीकविदों ने कक्षाओं का अनुवाद मराठी में किया। इसके अलावा तकनीकविदों ने जीएमपी, एसएसओपी, एचएसीसीपी, मछली के खराब होने, मछली के संरक्षण के तरीके व साफ सुथरे ढंग से उसके रखरखाव पर कक्षाएं लीं। पंजीकृत हुए 39 अभ्यार्थियों में से 37 अभ्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

बाहर से आए जांचकर्ता ने 20 सितंबर, 2019 को इस बैच का मूल्यांकन किया। टेबलेट फोन का इस्तेमाल कर ऑनलाइन परीक्षा ली गई। इसके बाद प्रैक्टिकल परीक्षा ली गई और सवाल-जवाब भी पूछे गए।

इन कार्यक्रमों के बारे में जिलाधिकारी को पहले से लिखित में सूचना दे दी गई थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के नतीजे एनएसडीसी की वेबसाइट पर प्रकाशित किए गए थे। इसमें यह दर्ज था कि सभी 66 अभ्यार्थियों ने सफलतापूर्वक कार्यक्रम पूरा किया और वे प्रमाणपत्र प्राप्त करने के योग्य हैं।

सामान्य किसानों के लिए विविधीकृत जलीय कृषि पर प्रशिक्षण

विविधीकृत जलीय कृषि पर कक्षा लेते एमपीईडीए नागपट्टिनम क्षेत्रीय डिवीजन के सहायक निदेशक श्री के. रेजी मैथ्यू।

तिरुपुर जिले के अमरावती में सामान्य किसानों के लिए विविधीकृत जलीय कृषि तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 से 8 अगस्त, 2019 तक आयोजित हुआ।

एमपीईडीए के नागपट्टिनम क्षेत्रीय डिवीजन के सहायक निदेशक (जलीय) श्री. के. रेजी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने निर्यातउन्मुख जलीय कृषि के लिए एमपीईडीए के योगदान, मछली पालन के लिए स्थान के चयन के साथ- साथ उसे बनाने के बारे में प्रकाश डाला।

इसके बाद तिरुपुर के मत्स्य इंस्पेक्टर श्री प्रभु ने क्षेत्र में विविधीकृत जलीय कृषि की संभावनाओँ को उजागर किया। एमपीईडीए के नागपट्टिनम क्षेत्रीय डिवीजन के लैब असिस्टेंट डॉ. ए. कन्नान ने गिफ्ट तिलपिया, सीबॉस और निर्यात बढ़ाने के लिए ताजे पानी के झींगा पालन पर कक्षाएं लीं।

अगले दिन एमपीईडीए के सहायक निदेशक (सेवानिवृत्त) डॉ. ए. रामास्वामी ने मछली के विविधीकरण, विविधीकरण के लिए प्रजातियों के चयन, तालाब तैयार करने की तकनीकों और फार्म प्रबंधन की तकनीकों पर प्रकाश डाला। इस सत्र के बाद डॉ. कन्नान ने प्रतिभागियों को मछली और झींगा

अमरावती में प्रतिभागी।

किसानों से संवाद करतीं ईरोड में मत्स्य विभाग की सहायक निदेशक श्रीमती पद्मावती।

पालने की तकनीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने मछली/झींगा पालन का आर्थिक विश्लेषण भी किया।

कार्यक्रम के अंतिम दिन किसानों ने अमरावती में श्री युवलराज के मछली बीज केंद्र और मछली पालन केंद्र का दौरा किया। मछली पालन केंद्र पर प्रशिक्षणार्थियों को मछली पालन की तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में 23 प्रशिक्षणार्थियों ने हिस्सा लिया था। एमपीईडीए के नागपट्टिनम क्षेत्रीय डिवीजन के सहायक निदेशक (अक्वा) के. रेजी मैथ्यू ने कार्यक्रम के समापन पर प्रशिक्षण प्रमाणपत्र वितरित किए। टीएनएफडीसी के डिवीजन मैनेजर श्री चिरालन और डॉ. कन्नान ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

मेट्टुपालयम में प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लेते प्रतिभागी।

मेट्टुपालयम

ईरोड जिले के मेट्टुपालयम में 20 से 22 अगस्त तक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें 22 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस सत्र का उद्घाटन भी नागपट्टिनम क्षेत्रीय डिवीजन के सहायक निदेशक (जलीय) के. रेजी मैथ्यू ने किया।

उद्घाटन व्याख्यान के बाद निर्यात उन्मुख जलीय कृषि के संवर्द्धन में एमपीईडीए के योगदान, मछली पालन के लिए जगह के चुनाव और उसे बनाने की तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई।

ईरोड की मत्स्य सहायक निदेशक श्रीमती पद्मावती ने किसानों से गिफ्ट मछली पालन के फायदों के बारे में बातचीत की। ईरोड की मत्स्य इंसपेक्टर श्रीमती शशिकला ने क्षेत्र में विविधीकृत जलीय कृषि के अवसरों के

बारे में जानकारी दी।

इसके बाद डॉ. रामासामी ने मछली के विविधीकरण, विविधीकरण के लिए प्रजातियों के चयन, तालाब तैयार करने की तकनीकों और फार्म प्रबंधन तकनीकों पर कक्षाएं लीं। डॉ. कन्नान ने गिफ्ट तिलपिया के महत्व, सीबॉस और आने वाले दिनों में ताजे पानी के झींगे के निर्यात में तेजी से उछाल आने पर कक्षाएं लीं। श्री रेजी मैथ्यू ने मछली और झींगा पालन की तकनीकों और मछली/झींगा का तुलनात्मक आर्थिक विश्लेषण किया।

कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रतिभागियों ने अनंथासगाराम में श्री के. वेंकटचेलम के मछली पालन स्थल का दौरा किया। वे गिफ्ट को पालते हैं। प्रतिभागियों को इस मछली पालन केंद्र पर फार्म प्रबंधन की तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई और विविधीकृत जलीयकृषि के बारे में उनके संदेहों का निदान किया गया। कार्यक्रम के समापन पर प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

एंटीबायोटिक के इस्तेमाल पर जागरूकता कार्यक्रम

किसानों को जलीयकृषि में एंटीबॉयोटिक्स का इस्तेमाल करने पर होने वाले दुष्परिणामों के बारे में बताया गया।

जलीय कृषि में एंटीबॉयोटिक का इस्तेमाल रोकने के लिए मैना गांव में 10 जुलाई, 2019 को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें मैना व आसपास के क्षेत्रों के एल. वन्नामेई पालन करने वाले किसानों ने हिस्सा लिया। एमपीईडीए के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री शेषेन्द्र शिरोडकर ने बताया कि निर्यात किए जाने वाले उत्पादों में एंटीबॉयोटिक्स होने पर खेप लौटा दी जाती है। उन्होंने जैवसुरक्षा के तरीकों, श्रिम्प पालन में बेहतर प्रबंधन के तरीकों के बारे में बताया। उन्होंने कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले 13 किसानों को अनुदान योजनाओं, यूआईडी पंजीकरण कार्ड के महत्व के बारे में जानकारी दी। प्रतिभागियों को एंटीबॉयोटिक्स का इस्तेमाल रोकने से संबंधित पर्चे दिए गए। उन्हें सुझाव दिया गया कि जलीय कृषि में प्रतिबंधित एंटीबॉयोटिक्स का इस्तेमाल नहीं करें।

एचएसीसीपी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

सत्र का संचालन करते एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री वी. विनोद।

एमपीईडीए के तूतीकोरन उपक्षेत्रीय डिवीजन ने तूतीकोरन क्षेत्र के समुद्री खाद्य के तकनीकविदों के लिए चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम तूतीकोरन के सीएमएफआरआई कॉन्फ्रेंस हॉल में 6 से 9 अगस्त, 2019 तक आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में हिस्सा लेते प्रतिभागी।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन मैसर्स नीला सीफूड्स प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री सेल्विन प्रभु ने किया। इस अवसर पर तूतीकोरन स्थित सीएफएमआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मनोज कुमार भी उपस्थित थे। इस प्रशिक्षण का संचालन एमपीईडीए के एचएसीसी टीम ने किया। इस टीम में सहायक निदेशक श्री विनोद, तकनीकी अधिकारीगण श्री सुब्राय पवार और श्री वानिया किशोर कुमार थे। इस कार्यक्रम में 22 तकनीकविदों ने हिस्सा लिया।

इस कार्यक्रम में विषय थे जैसे एचएसीसीपी का परिचय, प्री रिक्विजिट प्रोग्राम्स एंड बुनियानी सीजीएमपी व एसएसओपी, जोखिम, जोखिम विश्लेषण व नियंत्रण के तरीके, जोखिम नियंत्रण करने के बिंदु व जोखिम की सीमा, सीसीपी की निगरानी और सुधारात्मक कार्रवाई, प्रमाणीकरण की प्रक्रिया, रिकार्ड कीपिंग और अमेरिका के समुद्रीखाद्य नियंत्रक राष्ट्रीय मानदंड, ईयू रेगूलेशन एंड ट्रेसिबिल्टी, एचएसीसीपी योजना विकास और एचएसीसीपी मैनुअल तैयार करने के दिशानिर्देश, एसएसओपी का प्रस्तुतीकरण, समूह के लिए एचएडब्लू और एचएसीसीपी प्लान।

सत्र का संचालन करते एमपीईडीए के तकनीकी अधिकार श्री वानिया किशोर कुमार।

दोपहर के सभी सत्रों के बाद व्यावहारिक प्रशिक्षण के सत्र होते थे। व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए प्रतिभागियों को चार समूहों में बांट दिया जाता था और प्रतिभागी समूह बनाकर प्रस्तुतीकरण करते थे। प्रतिभागियों को अध्ययन सामग्री मुहैया करवाई गई थी।

तिरुवल्ला की धारा में मिली कुबड़ वाली मछली की नई प्रजाति

मध्य त्रावणकोर क्षेत्र में ताजे पानी की मछली की नई प्रजातियां मिली हैं। इनकी विशेषता यह है कि इसकी कुबड़ निकली हुई है।

नई प्रजातियों का नाम Puntius kyphus रखा गया है। इसका नामकरण कोल्लम जिले के चवारा सरकारी कॉलेज के मैथ्यूज प्लमूट्टिल ने रखा है। इसके बार में जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेंटल जूलॉजी में प्रकाशित हुआ है।

पुंटियस कैफस नाम की नई प्रजाति की खोज और नामकरण कोल्लम जिले के चवारा के गवर्नमेंट कॉलेज के मैथ्यूज प्लमूट्टिल द्वारा किया गया है। इस बारे में जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेंटल जूलॉजी के नवीनतम अंक में प्रकाशित हुआ है।

पुंटियस मछलियां फैमिली साइप्रिंडे से संबंधित होती है जिनके कांटे होते हैं। ये छोटी, तैलीय और आलंकारिक मछलियां होती हैं। ताजे पानी की ये मछलियां दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया और ताइवान में पाई जाती हैं। इस प्रजाति का नाम kyphus है जिसका ग्रीक भाषा में मतलब कुबड़ होता है। इसके शरीर में वक्राकार उभार होता है जो इसे इस जीन्स की मछलियों से इसे अलग करता है। चांदनी रंग की इस मछली के हल्के पीले रंग के फिन्स होते हैं और इसके शरीर पर धारियां होती हैं। इसके डोरसल फिन कमजोर और लचीले होते हैं।

तिरुवल्ला की धारा में नौ सेंटीमीटर लंबी मछलियां मिली हैं। देखने में इनसे मिलती - जुलती अन्य मछलियों से इनकी तुलना की गई लेकिन इनकी पहचान अलग प्रजातियों के रूप में की गई है। इसके नमूने मेघालय स्थित जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के संग्रहालय में एकत्रित करा दिए गए हैं। श्री मैथ्यूज ने बताया कि इसे इंटरनेशनल बैंक ऑफ जूलॉजिकल नोमेनक्लेचर से जू बैंक पंजीकरण नंबर मिला है। यह नंबर नई प्रजाति के नामों की पुष्टि कराता है।

- www.thehindu.com

अध्ययय से खुलासा, मनुष्यों की तरह मछली भी दर्द का अनुभव करती है

मनुष्यों की तरह ही मछली भी दर्द का अनुभव कर सकती है। मछली का शिकार करने वाले यह बहाना बना सकते हैं कि मछली को दर्द नहीं होता है। इसी तर्क के आधार पर अपने उस अपराधबोध को कम करते हैं जब वे हुक से मछली पकड़ते हैं और उसे अपने प्राकृतिक आवास से निकाल कर एक तरफ पटक देते हैं। फिर उसकी फोटो खींचते है।

अगर आप भी उन लोगों में से हैं जो यह मानते हैं कि मछलियों को दर्द नहीं होता है। ऐसे में आपको फिलसाफिकल ट्रांजिक्शन्स ऑफ द रॉयल सोसायटी के शोध को पढ़ना चाहिए। इस शोध में लोगों की इस सोच को नकारा गया है कि मछलियों को दर्द नहीं होता है।

लीवरपुल यूनिवर्सिटी के लिन स्नेडन के मछलियों पर किए गए अध्ययन के अनुसार नीमो, फ्लिपर, फ्लाउंडर और उनके अन्य दोस्त मनुष्य की तरह दर्द का अनुभव करते हैं। अध्ययन में स्नेडन ने खुलासा किया कि जब मछली के होटों को दर्द दिया जाता है तो वे अपने मुंह को टैंक के किनारे रगड़ती हैं। मछलियां अपने शरीर को उस तरह रगड़ती हैं जैसे मनुष्य के पांव की अंगुली में चोट लगने पर वे रगड़ते हैं।

शोधकर्ताओं ने कांटे से मछलियां पकड़ने के बाद उनके व्यवहार पर अध्ययन किया और फिर निष्कर्ष पर पहुंचे। अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने मछली की प्रजाति मैरीन श्रिनर पर्च को हुक से पकड़ा और सक्शन तकनीक से भोजन दिया तो मछली ने कम भोजन खाया। इसके अलावा गोल्ड फिश के उस क्षेत्र में कुछ दिन तक बिजली के हल्के झटके दिए गए। इसके बाद उन्हें दर्द होने के लक्षण कम दिखाई दिए। इसके बाद मछली को पेन किलर (दर्द निवारक) दवाई दी गई तो पहले की अवस्था में व्यवहार करने लगीं। उन्हें दर्द महसूस होने लगा। स्नोडन के अनुसार अगर कोई यह स्वीकार कर लेता है कि मछलियों को दर्द होता है। फिर वह यह महत्वपूर्ण बात समझ सकता है कि मछलियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए। स्नोडन ने यह दलील दी कि जब मछली को देखभाल करने के दौरान उनकी संवेदनशील त्वचा को नुकसान नहीं पहुंचे। उन्हें पकड़ा जाए और तड़पा तड़पा कर नहीं मारा जाए।

www.news18.com

गहरे समुद्र में मछली पकड़ने वाले मछुआरों के लिए सेटलाइट आधारित सलाह सेवा की शुरुआत

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईएनसीओआईएस) और भारतीय विमान प्राधिकरण ने गहरे समुद्र में मछली पकड़ने वाले मछुआरों को अलर्ट व अन्य संदेश देने के लिए नए सिस्टम की शुरुआत बुधवार को की। यह सेवा उन मछुआरे के लिए है जो गहरे समुद्र में कई दिनों तक जाकर मछली पकड़ते हैं व अन्य गतिविधियां करते हैं।

वर्तमान में मछुआरों को सलाह, पूर्वानुमान और शुरुआती चेतावनियां मिलती है जैसे संभावित फिशिंग जोन (पीएफजेड) के बारे में सलाह, महासागर की स्थिति के बारे में पूर्वानुमान, ऊंची लहरों के बारे में चेतावनी, सूनामी और तूफान की प्रारंभिक चेतावनियां आदि। लेकिन ये चेतावनियां तट से केवल 10 से 12 किलोमीटर दूर तक ही भेजी जा सकती हैं। ऐसी सूचनाओं को समुद्र में 50 नॉटिकल मील (90 किलोमीटर) और उससे ज्यादा दूरी तक भेजने की जरूरत है।

इस सेवा का औपचारिक रूप से उद्घाटन विज्ञान, तकनीक और पृथ्वी विज्ञान मंत्री डा. हर्षवर्धन ने किया। उन्होंने कहा कि यह सेवा इस अंतर की खाई को पाटेगा।

नवंबर-दिसंबर 2017 में ओखी चक्रवात आने पर यह कम्यूनिकेशन गैप अत्यधिक महसूस किया गया था। इसका कारण यह है कि जो मछुआरे गहरे समुद्र में मछली पकड़ने चले गए थे, उन तक चक्रवात आने की सूचना नहीं पहुंच पाई थी। इससे जान-माल की हानि हुआ, बचाए गए लोगों को गंभीर चोटें आईं और मछली पकड़ने वाली नौकाओं और मछली पकड़ने वाले गीयरों को अत्यधिक नुकसान हुआ।

इस नए सिस्टम का विकास इस समस्या को दूर करने के लिए किया गया है। इस सेवा के लिए खास डिजाइन विकसित किए गए हैं और इसमें मोबाइल एप्लीकेशन है। इसके लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान सेवा संगठन (इसरो) का सेटलाइट सिस्टम गगन (जीपीएस-एडिड जियो आगुमेंटिड नेविगेशन) और भारतीय विमान प्राधिकरण संचार मुहैया करवाते हैं। गगन में तीन जियोसाइक्रोनस सेटलाइट जीसेट 8, जीसेट 10 और जीसेट 15 हैं। यह भारत के समुद्री क्षेत्र पर हर समय नजर रखते हैं।

गगन के जरिए डिवाइस पर अलर्ट व अन्य संदेश भेजे जाते हैं। डिवाइस संदेश को ब्लू टूथ से मोबाइल फोन पर भेज देता है। मोबाइल एप्लीकेशन सूचना को डिकोड कर दर्शाता है। यह अलर्ट और संदेश नौ भाषाओं में भेज जा सकते हैं। यह तकनीक बंगलुरु स्थित कंपनी एकोर्ड को स्थानांतरित कर दी गई है। इस डिवाइस का नाम जैमिनी (गगन इनेबल मैरीनर इंस्ट्रूमेंट फॉर नेविगेशन एंड इंफार्मेशन) रखा गया है।

डॉ. हर्षवर्धन ने इस सिस्टम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. माधवन राजीवन (सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय), डॉ. सतेश सी. शेनाई (निदेशक, आईएनसीओआईएस) और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

मंत्रालय ने आईएनसीओआईएस द्वारा संभावित मत्स्य क्षेत्र (Potential Fishing Zone) का पूर्वानुमान लगाने वाले बेहतर वर्जन को लॉन्च किया। नया वर्जन तीन दिन पहले सलाह मुहैया करवा सकता है। यह नया वर्जन आधुनिक तकनीक पर आधारित है और यह आसमान में बादल होने पर भी सलाह जारी कर सकता है।

- www.thehindubusinessline.com

मत्स्य खेती का आधुनिकीकरणः एनसीसीई में मत्स्य पालन सहकारी समितियों को प्रशिक्षण

भारतीय मछुआरों की विभिन्न सहकारी समितियों के अध्यक्षों और निदेशकों के लिए 'नेशनल सेंटर फॉर कोऑपरेटिव एजुकेशन' (एनसीसीई), नई दिल्ली में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें उन्हें सहकारिता के माध्यम से मछली की आधुनिक और व्यावसायिक खेती के साथ ही, प्रबंधकीय कौशल को विकसित करने का भी प्रशिक्षण दिया गया।

एनसीसीई की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि तेलंगाना, ओड़ीशा, झारखंड और उत्तर प्रदेश इत्यादि राज्यों के 42 प्रतिभागी इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए। कार्यक्रम का उद्देश्य समिति प्रमुखों के ज्ञान और कौशल में सुधार करना था ताकि वे संबंधित समितियों का पेशेवर ढंग से बेहतर संचालन कर सकें।

प्रतिभागियों को इस कार्यक्रम के माध्यम से एक-दूसरे के साथ संवाद करने का भी अवसर मिला और वे अलग-अलग सहकारी समितियों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों के बारे में

अवगत हुए। कार्यक्रम के अंतर्गत मत्स्य क्षेत्र से संबंधित विभिन्न विषयों का एक 'ट्रेनिंग कैप्सूल' तैयार किया गया था। इस अवसर पर एनसीसीई के निदेशक डॉ. वी.के. दुबे ने कहा कि लाभकारी मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण खाद्य उपलब्धध कराने में मत्स्य क्षेत्र अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक सहकारी समिति को चाहिए कि वह आगामी वर्षों के लिए एक ठोस व्यापारिक योजना बनाए।

'फिशकोफेड' के प्रबंध निदेशक बी.के. मिश्रा ने मत्स्य सहकारी समितियों के विकास में फिशकोफेड की भूमिका पर एक अवलोकन प्रस्तुत किया। 'एनबीसीएफडीसी' की महाप्रबंधक सुश्री अनुपमा सूद ने मछुआरा सहकारी समितियों के लिए एनबीसीएफडीसी की योजनाओं और कार्यक्रमों पर एक सत्र आयोजित किया।

कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों ने सहकारिता के सिद्धांत व मूल्यों, गुणकारी एवं प्रभावशाली नेतृत्व, सहकारी प्रबंधन, मछुआरा सहकारी समितियों के लिए बीमा योजनाएं और संचार कौशल इत्यादि विषयों की जानकारी दी।

अपने धन्यवाद संबोधन में एनसीसीई के निदेशक डॉ. दुबे ने आशा जताई कि प्रतिभागी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्त ज्ञान का उपयोग अपनी-अपनी समितियों की बेहतरी के लिए करेंगे। एनसीसीई के सहायक निदेशक अनंत दुबे ने कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया। सभी प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

-www.indiancooperative.com

सीबास हैचरी में प्रोद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एमओयू

महाराष्ट्र सरकार ने राज्य में जलीय कृषि के माध्यम से मछली उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आईसीएआर-सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रेकिशवाटर एक्वाकल्चर (सीआईबीए) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस आशय के एमओयू में राज्य सरकार के वित्त पोषण में एक अत्याधुनिक सीबास मत्स्य हैचरी की स्थापना शामिल है। साथ ही, खारे पानी में केज फार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए महाराष्ट्र के मैंग्रोव फाउंडेशन के साथ सीआईबीए की साझेदारी को जारी रखने का भी प्रावधान है। साझेदारी का यह मॉडल तटीय ग्रामीणों के लिए वैकल्पिक आजीविका प्रदान करने वाला एक सफल मॉडल सिद्ध हुआ है।

आईसीएआर के मातहत सीआईबीए के माध्यम से भारत सरकार सीबास हैचरी में 20 लाख मत्स्यक बीजों की वार्षिक उत्पादन क्षमता के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करेगी। यह हैचरी महाराष्ट्र के सिन्धुदुर्ग जिले के वेंगुरुला तालुक में स्थापित की जानी है जो कि मुंबई से लगभग 500 किलोमीटर दूर है। हैचरी, मैंग्रोव जंगलों के आसपास रहने वाले मछुआरों और तटीय ग्रामीणों को आजीविका का साधन उपलब्धि कराने में सहायक होगी। इसमें हैचरी, लार्वा और नर्सरी पालन इत्यादि की सुविधाएं शामिल होगी। प्रशिक्षण के लिए इसे चेन्नई के मुत्तुकडु स्थित सीआईबीए हैचरी से संबद्ध किया जाएगा।

सीबास पश्चिमी तट में उत्पादित फिनफिश प्रजाति की सबसे अधिक मांग वाली मछलियों में है। सिन्धुथदुर्ग जिले में सीआईबीए और मैंग्रोव फाउंडेशन के बीच पहले से कायम साझेदारी के तहत केज फार्मिंग के जरिये की जाने वाली सीबास की खेती आर्थिक दृष्टि से लाभदायक सिद्ध हुई है। महाराष्ट्र में 720 किलोमीटर की समुद्री तटरेखा के साथ खारे पानी के विशाल संसाधन हैं। यहां सीबास जैसी फिनफिश प्रजातियों की खेती की अपार संभावनाएं हैं।

एमओयू पर महाराष्ट्र सरकार के पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन सचिव अनूप कुमार, मैंग्रोव फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक एन. वासुदेवन, महाराष्ट्र सरकार के मत्स्य पालन आयुक्त आर.आर. जाधव और चेन्नई स्थित सीआईबीए के निदेशक डॉ. के.के. विजयन की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए।

-www.ciba.res.in

PRAWN FEED
AVANTI
FEEDS LIMITED
In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company
Aiding sustainability & reliability to Aquaculture
MANAMEI
VANNAMEI FEED
VANNAMEI FEED
PROFEED 4
BLACK TIGER SHRIMP FEED
TITAN
BLACK TIGER SHRIMP FEED
Shrimp Hatchery
Feed Plant - Gujarat
Prawn Feed & Fish Feed
Prawn Processing & Exports
INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN
• GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
• LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY
AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS
AVANTI A.H.C.P. RANGE
Thai Union
IN COLLABORATION WITH: THAI UNION FEEDMILL CO., LTD., Thailand.
Chelated Trace Mineral Supplement
Avant Saldo Mixtos
Marine Mineral
Avant D-Flow
Water Quality Improver
Avant Pro W
Soil & Water Probiotic
Avant Bact
Gut Probiotic
Avant AmmoniAbsorb
Ammonia Absorber
Avant Life
Oxy-Generator
Avant Immupak
Immunity Enhancer
Avant Catcher
Corporate Office: Avanti Feeds Limited
G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com
Regd. Office: Avanti Feeds Limited.
H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.

Innovative safeguards against complex risk

At Integro, we understand the risks involved with Seafood. We are committed to simple solutions to complex risks through our expertise.

Protect yourself with bespoke Rejection/Transit Insurance solutions from Integro Insurance Brokers.

Contact us to experience our expertise:
Raja Chandnani
Phone: **+44 20 74446320**
Email: **Raja.Chandnani@integrogroup.com**
www.Integrouk.com

INTEGRO UK
INSURANCE BROKERS